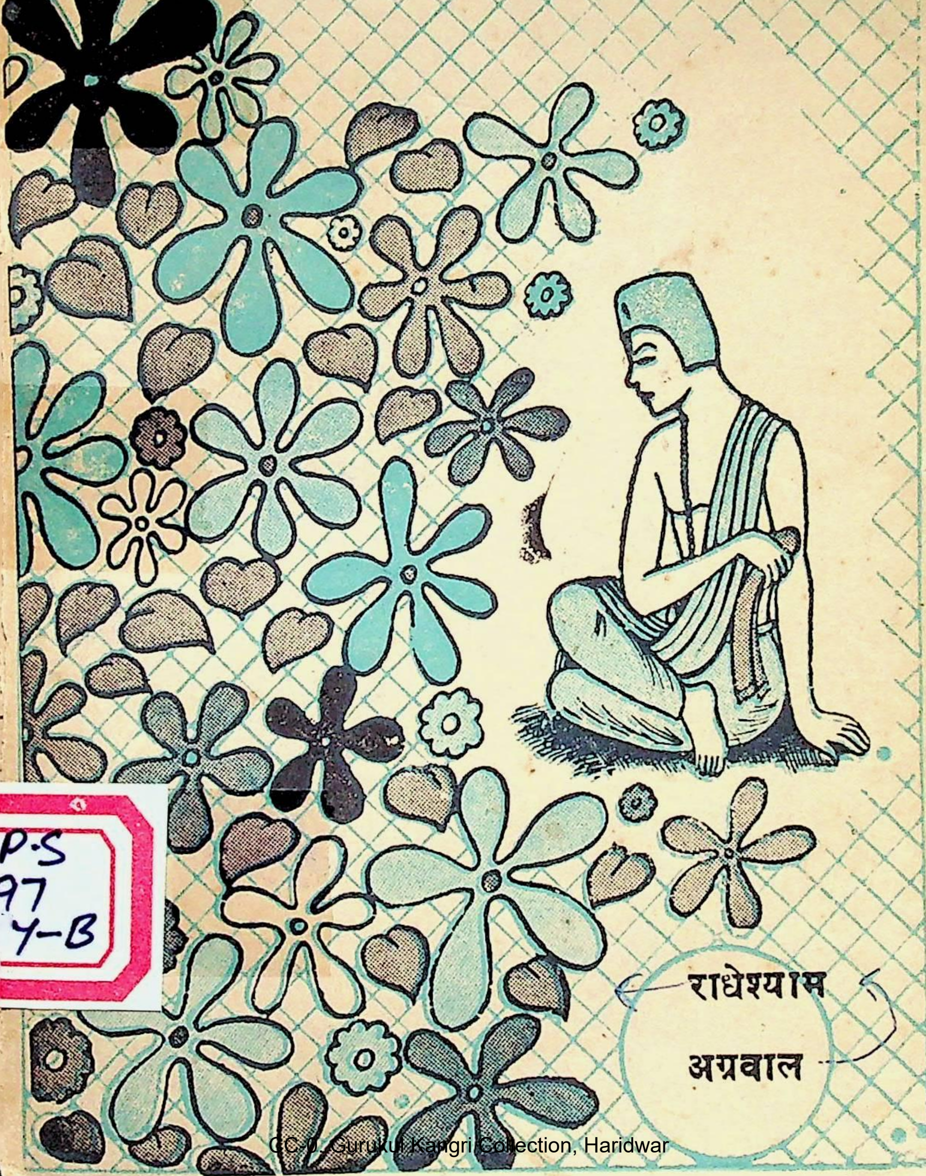
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रज-सौरभ



P.S
97
4-B

राधेश्याम अग्रवाल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

185499

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मति हेतु सेवा में सादर प्रेषित:

[signature]

सचिव

रस-भारती,

100/5 जगन्नाथपुरी, मथुरा (उ.प्र.)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



ब्रज सौरभ

Central Library
185499
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

097
185499

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R. R. S
097
ARY-B



CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रजभाषा गद्य में लिखित

ब्रज-परिवेश संबंधित निबंध

राधेश्याम अग्रवाल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक

ब्रज-साहित्य संस्कृति अकादमी

(रस-भारती)

मथुरा

* आमुख : डा० लक्ष्मीनारायण दुबे
प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग,
सागर विश्व विद्यालय, सागर (म. प्र.)

* सम्पादन : डा० त्रिलोकीनाथ ब्रजवाल

रचनाकार
ब्रज रस-रसिक
राधेश्याम अग्रवाल

प्रथम संस्करण
1988

मुद्रक

मनोहर प्रिंटिंग प्रेस, घीयामण्डी, मथुरा

मूल्य : 10-00

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पन

श्री मनोहर श्याम युगल के श्री चरणन में

जिनकी पद-रज से आज हू

ब्रज कौ कण-कण

सुवासित है।

—राधेश्याम अग्रवाल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक-परिचय

* नाम : **राधेश्याम अग्रवाल**

* जन्म तिथि : श्रावण शुक्ला चतुर्दशी, सं० १९९६ वि०
१० अगस्त सन् १९३८ ई०

* पिता श्री : **स्व० श्री मनोहरलाल जी मित्तल**

* कृतियाँ

* शिक्षा : एम. ए. (हिन्दी साहित्य), साहित्यरत्न

मौलिक काव्य : (१) बिम्ब-प्रतिबिम्ब (आधुनिक काव्य)
(२) द्वाभा ,,
(३) बिंदु बिंदु सिंधु ,,
(४) ब्रज-मंजरी (काव्य)

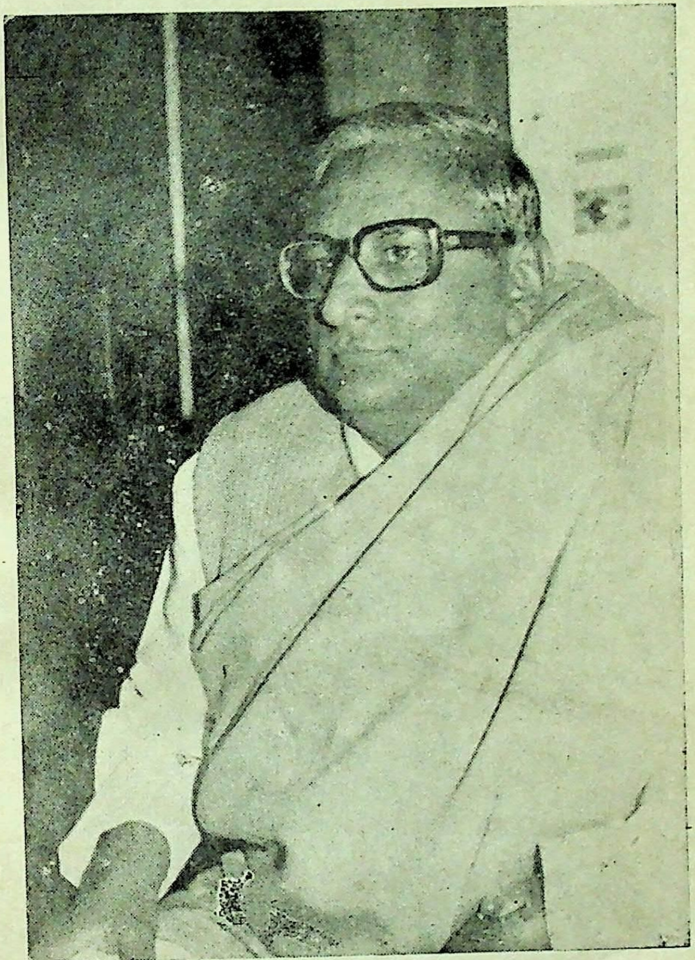
गद्य : (१) ब्रज-गंधा (निबन्ध संग्रह)
(२) ब्रज-वल्लरी ,,
(३) ब्रज-सौरभ ,,
(४) कदम्ब के फूल ,,
(५) स्वतंत्रता-संग्राम और पौराणिक हिन्दी काव्य
(६) नये काव्य नये संदर्भ (आलोचना)

सम्पादित : (१) कविवरलाल बलवीर और उनका काव्य (समीक्षा)
(२) तेलगु और हिन्दी लोकोक्तियाँ (समीक्षा)
(३) ब्रज-बिनोद (काव्य)
(४) प्रतिबिम्बित इन्द्रधनुष (काव्य)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रज क्षेत्र के चिंतक, लेखक, कवि एवं पत्रकार



राधेश्याम अग्रवाल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) सूर-पदावली (काव्य)
(६) सूर-नवनीत (काव्य)
(७) कबीर-पदावली (काव्य)
(८) तुलसी-पदावली (काव्य)
(९) मीरा-पदावली (काव्य)
(१०) सृजन के स्वर (काव्य)
(११) श्री राधा जन्मोत्सव (काव्य)
(१२) संस्कृति के स्वर (निबंध-संग्रह)
(१३) श्री कृष्ण कीर्ति ,,
(१४) बाल-विहार (बाल-साहित्य-पुस्तक-माला)

पत्र-संपादन : (१) मनोवेग (हस्तलिखित साहित्यिक पत्रिका)
(२) शिक्षक-संसार (साहित्यिक/शैक्षिक मासिक-पत्र
(३) ज्ञानदा (शोध-पत्रिका)

कार्य-क्षेत्र : देवभाषा प्रचारिणी परिषद्, मथुरा
हिन्दी प्राध्यापक परिषद, किशोरी रमण कालेज संस्थाएँ, मथुरा.
हिन्दी प्रचार सभा, मथुरा.
भारती अनुसंधान भवन, मथुरा.
ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा.
ब्रज साहित्य-संस्कृति अकादमी (रस-भारती) मथुरा.
निर्दलीय नागरिक समिति, मथुरा.
उत्तर प्रदेश मुद्रक एवं प्रकाशक संघ, लखनऊ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचना-प्रकाशन-स्रोत : कोंपल, जबलपुर, प्रतिष्ठा (पूना)
बल्लभ वार्षिकी (वाराणसी) ब्रज शतदल, जयपुर.
जवाहर ज्योति, ज्ञानदा, ब्रज भारती, अमर-उजाला, शिक्षक-संसार मथुरा.
आदि पत्र-पत्रिकाएँ
आकाशवाणी, मथुरा से अनेक वार्ताएँ प्रसारित।

अभिरुचि : साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, पत्रकारिता एवं प्रकाशन।

स्थायी पता : १००/५, जगन्नाथपुरी, श्रीकृष्ण जन्मभूमि, मथुरा.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट—
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

पूर्वा

मानव ने जब प्रथम बार अपनी आँखें इस धरा पर खोलीं तो उसने विशाल पृथ्वी, हरे भरे गहराते, गदराते, झूमते वृक्ष और वनस्पति, खुला-लम्बा-चौड़ा अनन्त आकाश, उन्मुक्त बहती पवन, इठलाती-बलखाती सरिताएं और गरजता-मचलता अपार सागर देखा। उसने अपने ही समान विभिन्न थल, जल, नभ चर प्राणियों की संगति भी पायी। इस प्रकार आदि मानव उन्मुक्त प्रकृति का नैसर्गिक सहयात्री रहा। प्रकृति के सहज साहचर्य से ही उस मानव ने समाज और उसके विकास की यात्रा प्रारंभ की और उसकी यह अनवरत यात्रा ही उसकी संस्कृति के विकास का इतिहास बन गयी।

साहित्य कभी भी मानव की इस अनन्त यात्रा से पृथक नहीं रहा। ब्रज साहित्य और ब्रज-संस्कृति में प्रकृति का अटूट और अपरिहार्य योगदान इसी का परिणाम है। ब्रज और उसका समाज और उसकी संस्कृति प्राकृतिक परिवेश के अविच्छिन्न अंग हैं। मानव-समाज के चार पुरुषार्थ अथवा जीवन-मूल्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का विकास भी प्रकृति के उन्मुक्त प्रांगण में हुआ है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रज साहित्य के अभिनव शिल्पी बंधुवर श्री राधेश्याम अग्रवाल ब्रज-रस के रसिक भ्रमर हैं। उन्मुक्त प्रवाहित ब्रज-रस-धारा की रस-मयी बूंदों का उन्होंने आजीवन पान किया है और उसके आनन्द को प्रस्तुत रचना ब्रज-सौरभ में बिखेर दिया है। सम्पूर्ण रचना ब्रज-परिवेश की सौंधी सुगंध से सुवासित है।

मेरा विश्वास है कि, सुधी पाठक हृदय को तरंगायित कर देने वाले ब्रज की इस अद्भुत सुवास का आनन्द अवश्य प्राप्त करेंगे।

किमधिकम्।

श्री राधाष्टमी
सं० २०४५ वि०
श्री भवन,
मंडी रामदास, मथुरा

—डा० त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहि कछू कहनौ है !

ब्रज-गंधा, ब्रज-वल्लरी के बाद ब्रज-सोरभ मेरी तीसरी रचना है । ब्रज में जन्मौ, ब्रजवासी भयौ, ब्रज में खेल्यौ, ब्रज में ही रह्यौ, जाते जे ब्रज मेरे जीवन के हर पल में समायौ है । मोहि लगै कै हर पल श्री कृष्ण यहाँ विराजमान हैं । श्री यमुना, श्री गिरिराज तौ विनके अभिन्न सहचर रहे ही हैं । वे हू जानें कै श्रीकृष्ण ब्रज कू एक पल हू नहीं बिसारैं हैं । श्री राधा के संग हर पल रास में संलग्न हैं । नित्य विहार को क्रम निरंतर चल रह्यौ है और वाही को प्रकास इहाँ बिखर रह्यो है । वाही की सुवास पवन कौ आश्रय लैकै बिखर रही है । वा सौरभ को ठिकानौ कहाँ कहाँ ढूंढू । कहा कवीन के हृदय में, मेलान में, वृच्छन में, जन-मन में । सब ही जगह तौ फैलो भयौ है जे सौरभ और जा पुस्तक में हू बिखरौ भयौ है, जाते ही तौ जे ब्रज-सोरभ है ।

पाठक गन ! आप हू जा दिव्य, अलौकिक ब्रज-सौरभ के रस को आनन्द लेओ । जे ही जीवन कौ परम फल है ।

आपको ही
राधेश्याम अग्रवाल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमुख

भाई राधेश्याम अग्रवाल की ब्रज-भाषा की वर्तमान सृजन-धर्मिता से प्रस्फुटित एक कदम्ब-पुष्पावली ब्रज-सौरभ-मन मोहिनी सुरभि के साथ वाङ्.मय संसार को सुवासित करनें को प्रस्तुत है।

ब्रज-संस्कृति तथा रचनात्मकता के पुरातन तथा प्रांजल युग-धर्म से अधुनातन परिवेश को आवद्ध करने वाली इस कृति में ब्रज-बेलि की कमनीयता तो है ही, साथ ही भ्रमर की भांति सम्पूर्ण पर्यावरण को गुंजायमान करने की अद्भुत सामर्थ्य भी है।

साहित्य के वहु आयामी स्वरूपों को अपनी पुनीत तथा व्यापक क्रोड़ में समाहित करने वाली अनेक विधाओं के साथ न्याय करके, श्री राधेश्याम अग्रवाल ने अपनी मौलिक प्रतिभा, उर्वर मनीषा, प्रखर मेधा शक्ति तथा माटी की सौंधी सुगंध को चहुँ ओर परिव्याप्त कर दिया है।

ब्रज-संस्कृति का स्वरूप सर्वतोमुखी है और रसोपासना से सराबोर भी। उसकी विविध झाँकियां इस कृति में लोक कला तथा लोकांचल की विशेषता के साथ दर्शनीय हैं।

ब्रजभाषा गद्य का साफ-सुथरा, प्रौढ़ तथा परिष्कृत रूप इस कृति के एकांकी तथा रेखाचित्र में उभर निखर कर आया है। कहानी के माध्यम से ब्रज की स्थिति तो सुस्पष्ट हुई ही है, आज की हिन्दी की कहानी की मानसिकता को भी जमीन के साथ जोड़ने का सच्चा तथा अच्छा उपक्रम किया गया है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रज-साहित्य में व्यंग्य सर्वथा नूतन विधा है। उसके तेवर बढ़े चढ़े हुए हैं और उसने अपनी स्वतंत्र एवम् स्वायत्त सत्ता स्थापित करली है। ब्रजभाषा में व्यंग लिखना टेढ़ी खीर है। इस चुनौती को श्री राधेश्याम अग्रवाल बखूबी स्वीकार करते हैं।

श्री अग्रवाल ने अपने विचार-विमर्श के फलक को पर्याप्त विस्तीर्ण स्वरूप प्रदान किया है जिससे उनके व्यापक अध्ययन का प्रतिफल हमें प्राप्त हुआ है। वे अमीर खुसरो से लेकर सनेही राम तक एक ऐसी धारावाहिक श्रृंखला का निर्माण करते हैं जो कि एक परम्परा का स्वरूप ग्रहण कर लेती है। इसी प्रकार उदासीन सम्प्रदाय की अनेक अच्छी बातों से हमें अवगत कराकर वे ब्रज के धर्म-सम्प्रदायों की खिड़की उन्मुक्त करने में अग्रणी बने हैं।

श्री राधेश्याम अग्रवाल का ब्रजभाषा गद्य सलौना तथा मिठलौना है और हमारे हिये को हिलोरें प्रदान करता है। उसमें लालित्य है तो ऋजुता भी।

आज श्री राधेश्याम अग्रवाल ब्रजभाषा तथा ब्रज-संस्कृति के उल्लेखनीय हस्ताक्षर बन चुके हैं। उनका रचना-कर्म उनको नित-नूतन पथ के द्वार अनावृत्त कर रहा है।

मेरी आस्था है कि यह कृति न केवल ब्रजभाषा जगत ही अपितु हमारे देश के मर्म स्थल को पहचानने में सहायक होगी। मैं इसका हार्दिक स्वागत करता हूँ।

—डा. लक्ष्मीनारायण दुबे
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
सागर विश्वविद्यालय, सागर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रम

ब्रज हमारौ	१९
श्री कृष्ण लीला स्थल : गोकुल	२७
ब्रज के नव-निर्मित देवालय	३५
ब्रज की रसमई होरी के लोकगीत	४१
ब्रज लोक कला-टेसू	४६
उदासीन सम्प्रदाय : उपासना-पद्धति	५२
वल्लभ कुल भूषण गोस्वामी श्री रमनलाल जी महाराज	५८
अमीर खुसरो कौ ब्रजभाषा-काव्य	६४
ब्रज के अल्पज्ञात कवि-रत्न—सनेहीराम	७१
ब्रजभाषा काव्य के अमूल्य रत्न—रामलला	७६

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखाचित्र	: तेरौ दरस मोहि भावै	८५
हास्यव्यंग	: नाच न आवै आंगन टेढ़ौ	८६
कहानी	: पुरिसारथ	६४
एकांकी	: कदम्ब की छैयां	६७
परिचय एवं समीक्षा	: श्री राधेश्याम अग्रवाल और उनका ब्रज-साहित्य	१०५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री राधायै नमः



ब्रज – सौरभ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रज हमारौ

ब्रज हमारौ चौरासी कोस में फैलौ भयौ है। जाहो ब्रज में आनन्द कंद लीलाचंद श्री कृष्ण चंद ने जन्म धारण करिकै अनेक लीला करीं। कहूं माटी खायी, कहूँ पूतना मारी, कहूँ गऊ चराईं, कहूँ वंसी वजाई, कहूँ रासलीला रचाई। जा ब्रज की रज अब लौं श्री कृष्ण चंद के चरन - कमल की रज ते संसिक्त है रही है। जाते जुग - जुग ते रिसी मुनी, कवी, संत - महंत, साधू - बैरागी और भक्त सभी जा रज कूं मस्तक पै धारन करिकैं अपने कू कृत्त कृत्त मानें। जे ब्रज महान है, अथाह हैं, अपार है। तभी तौ काहू ने कह्यौ है —

ब्रज समुंद मथुरा कमल, वृन्दावन मकरंद।
ब्रज बनिता सब पुष्प हैं, मधुकर गोकल चंद।।

इहाँ की लता - पतान कौ पत्ता पत्ता साक्षी है रह्यौ है, श्री कृष्ण की दिव्य लीलान कौ। जे लता पता वनस्पती मात्र नाहैं जे तो साक्षात गोलोक ते पधारे भए श्री कृष्णचंद के ब्रज लीला करिबे हेत विनके परिकर जन हैं। जाते सग के सग वंदनीय हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रज के मसहूर कवि लाल बलवीर जी बिंदाबनवासी भक्त कवि हे। बिंदावन के वनखंडी मोहल्ला की निम्बार्क सम्प्रदाय की श्री जी की कुंज के मंदिर में स्यामा स्याम की उपासना करते हे। बिनके गुरु हे मंदिर के अधिकारी श्री कृष्णदास जी, जिनकूं अपने ग्रंथ में बिननें कृष्णअली कह्यौ है। लाल बलवीर जी वौ निधन सं० १९७७ वि० की श्रावणी अमावस्या कू ८० वर्ष की अवस्था में भयौ हौ। आप श्री रामलाल जी अग्रवाल के पुत्र हे। बिननें ब्रज के संबंध में अनेक छन्दन की रचना करी। एक हजार छंद तौ बिनके जीवन - काल में ही पुस्तक के रूप में स्यामकासी प्रेस, मथुरा ते 'ब्रज - विनोद' अर्थात् लाल बलवीर कौ हजारा के नाम ते छप गए। आगरा विश्व विद्यालय ते बिनकी रचनान पै शोध-कार्य हू भयौ है। लगभग १२५ बरस पूर्व कवि - समाज में वे पढ़न्त - परम्परा के महारथी माने जाते हे। बिनके छंद आज हू अनेक काव्य प्रेमीन के कंठ में रमे भए हैं।

श्री लाल बलवीर जी स्यामा स्याम के परम भक्त हे और बिनकौ गुनानवाद गायौ करते हे। जाते बिनकौ ब्रज - बरनन हू बड़ौ दिव्य बन परौ है। ब्रज की चेतना हैं श्री राधा जी। श्री लाल बलवीर जी बिनते ब्रज में बास पाइबे की मनौती करें—

नमो नमो वृषभानजा नमो नमो सुख राज।
नमो नमो असरन सरन मम उर करो निवास॥
जद्यपि अधम मलीन हौं तदपि तिहारी आस।
सदा कृपा करि दीजिए श्री बनराज निवास॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar 185499

वनराज श्री वृन्दावन है, जहाँ जमना महारानी बहैं; जिनके तट पै नट नागर लीलाधर श्री कृष्ण निज ग्वाल बाल परिकर समेत क्रीड़ा करें और ब्रज बनिता संग रास रचामैं। वनराज जू की सदा उपासना करिवे हेत कवि मन कू समझावे है—

R.P.S
097
ARY-B

ऐ हो मन मीत सीख ऐती चित धार मेरी,
झूठे सुत वाम धाम नेह विसराइए।
कठिन कराल काल व्याल को है ख्याल जाल,
परी ताके गाल वासौं कौन उबराइए॥
लाल बलवीर हरिदासन को दास हूजै,
प्रेम रस पीजै सदा सुख बीच छाइए।
छोड़ जग फंद धंध लखो विवि चंद छैल,
वृन्दावन-चंद को गुनानवाद गाइए॥

जे वृन्दावन बड़ो ही मनोरम है। जामें अनेक फूल फूल रहे हैं। लता-तरु झुक झुक कै ब्रज-रज कू चूम रहे हैं। देखो कवि कहै—

फूले हैं फले हैं फल फूल बर रस मूल,
झूम झूम भूमि झुकि रहीं तरु डाली हैं।
कुन्दन सी बेली लपटानी हैं द्रुमन घन,
राधा मनमोहन सुदिष्टि कर पाली हैं॥
लाल बलबीर कीर कोयल किलोल बोलैं,
लेत मन मोलें तान गावत निराली हैं॥
वृन्दावन चंद जू की सुखमा कहां लो कहूँ,
चारों ओर जहाँ रंग रंग की बहाली हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा ऐसे दिव्य बिंदावन में स्यामा स्याम बिविध रस क्रीड़ा करि आमोद - प्रमोद मना रहे हैं। कवि ने जाकौ बड़ौ हीं मनोरम बरनन प्रस्तुत कियौ है—

अति सुकुमार छबिसार श्री लड़ैती लाल,
प्रेम उरमाल रति पति कौ लजावैं हैं।
कालिन्दी के कूल झूल रहें द्रुम बेली फूल,
बीन अंग भूषन नबींन लै सजाबैं हैं॥
नाना रस रेल खेल ही कौ सुख झेल झेल,
दोऊ मुसिक्यावें दोऊ दोऊ कू रिझाबैं हैं।
सुख बरसावैं अली गनन रिझावैं हेर,
लाल बलवीर मुख बांसरी बजाबैं हैं॥

बिंदाबन मात्र भूमि - भाग नाए, जे तौ दिव्य स्थल है, जामें श्री भगबान स्वयं वास करैं। जाते उद्धव जैसे ग्यानी हू बृन्दाबन - वास की कामना करैं। भक्त तौ भगवान ते जे ही कामना करै ब्रज की लता - पता मोहि कीजै। लाल बलवीरजी हू जे ही सिच्छा देमैं—

आयौ कर संतन की संगत में बार बार
सदा पद पंकज में सीस कौं नबायौ कर।
न्हायौ कर प्यारें मारतण्ड तनया में जाय,
रज कौं लगाय अंग अंग हुलसायौ कर॥
पायौ कर प्रभु के प्रसाद कौं प्रसन्न है कै,
नेम बनराज जू की परिकम्मा जायौ कर।
लायौ कर ध्यान मन मगन होय हृदै बीच,
बैठिकै निकुंजन मैं राधा गुन गायौ कर॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बृन्दावन तौ करोड़न ब्रह्मांडन ते हू ऊँचौ है। जाकी महिमा कौ कौऊ पार नांय पा सकै—

कोटि कोटि अंडन में धन्य ब्रह्म - मंडल है,
यामें उननचास कोटि भूमि सुखकंद है।
तामें सप्तदीप सप्तदीपन में जम्बू दीप,
तामें नव खण्डन भर्त खण्ड में अनंद है॥
तामें चार धाम नीके सप्तपुरी मध्य देस,
तामें ब्रज मण्डल की छाई मकरंद है।
चौदहु भुवन बैकुंठ पर्यन्त जेते,
ताते सर्वोपरि श्री बृन्दावन चंद है॥

बिदाबन की ही तनया ब्रज कौ दूजौ तीरथ श्री गौवर्धन है, जो भगवान श्री कृष्ण के समै हू हतौ और आज हू है। जाते जे भगवान की लीलान कौ साक्षी है। भगवान ने इन्द्र की पूजा कू मेटिकै गिरिराज की पूजा कराई ही।

लाल बलवीर जी कहैं—

इन्द्र जज्ञ ही कौ मांचौ घर घर जोर सोर,
मोद भरी डोलैं गोपी सर्व सुख साज की।
पापर, पकौरी दधि दूध, पकवान बहु,
करैंगी सकल भेंट भूमि सिरताज की॥
लाल बलवीर हँसि कह्यौ नंद जू सौं जाय,
जनम भगोरा याकी सेवा कौन काज की।
राखैं जन लाज पूजैं सदा सुभ काज,
ऐसौ है न जग दूजौ पूजा कीजै गिरिराज की॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोवर्धन ते पास ही परै बरसानौ। बरसानौ श्री राधारानी कौ गांम है। नंदगाम ते पहुँचे नंदलाला होरी खेलबे बरसाने। आज हू बरसाने की होरी जगत विख्यात है। बरसाने की होरी कौ एक दृश्य लाल बलवीर जी के शब्दन में देखौ—

इतै ठाड़े नंदलाल लीने गोप ग्वाल बाल,
उत लै सखीन बृषभान की किसोरी हैं।
मंद मुसिक्यावें राग नए नए गावें बहु,
बाजन बजावें लै उड़ावें रंग झोरी हैं॥
लाल बलवीर बाढ़ी मदन उमंग अंग,
धाई कहैं होरी लोक लाजहू कू तोरी है।
करैं बरजोरी मुख मीजत है रोरी,
धूम मांची चहुँ ओरी, आज बरसाने होरी है॥

व्रज में सावन कौ अनौखौ हीं आनंद है। जगह जगह झूला परि जांय और उन पै मलार के राग छिड़ जांय।

लाल बलवीर जी कहैं—

सावन सुहावन की आई हरियाली तीज,
गावत मलार व्रज बाल तन गोरे की।
ओढ़े सीस सारी श्यामा सोहनी सुनैरी कारी,
चंपई नारंगी औ कुसुंभी रंग बोरे की॥
लाल बलवीर प्रान प्रीतम के अंग संग,
झूलत उमंग भरी मदन मरोरे की।
जेहर झनक पै खनंक कटि किंकनी की,
बेसर चमंक पै दमंक है हिंडोरे की॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकुंज में प्रिया - प्रियतम विराजमान हैं। सखीगन बिनकी सेवा में लगी भई हैं। बड़ौ ही आनन्द कौ वातावरन है। निकुंज ही तो वो स्थल है जहाँ सुख ही सुख है।

कवि के शब्दन में—

अष्ट सखी आटौ जाम सेवत हैं सुखधाम,
ललिते प्रवीन बीरी रुचिर बनावै हैं।
प्रेम प्रीति बातें दंपति सिहाते रहें,
लहैं रुख जबै तबै रुचि सौं पवावैं हैं॥
लाल बलबीर अंग अंग गोरोचन सों,
तरुन नवीन मोर चंद ते सजावै हैं।
श्याम राधिका कौ बनराज की निकुंजन में,
छिन छिन नए नए चोज सौं लड़ावै हैं॥

ब्रज की संस्कृति कौ मुख्य अंश है, परसाद। जाहै बड़ी रुचि सौं बनायकै, प्रभु कौ धरावै हैं। ब्रज के भिन्न भिन्न स्थानन के परसाद की महिमा देखौ—

दाऊजी कौ माखन औ मिसरी अनौखी खीर,
गोकुल की लोटी सो सवाद बन्दवाने की।
चन्द्रमा की चंद्रकला चहुँ ओर जाहिर हैं,
दही औ बतासे वृन्दादेवी मनमाने की॥
मथुरा के पेड़ा वर टेटी ब्रजमंडल की,
गोवर्धन अन्नकूट सोभा सरसाने की।
दूध औ महेरी हेरी प्यारे नंदगाम ही की,
अतिसै सुगंध नोकी बीरी बरसाने की॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते जे ब्रजभूमि बड़ी बंदनीय है। जाके आगै स्वर्ग-अपवर्ग कौ सुख हू कछू नाहै। सभी जन्म - जन्मान्तर में हू ब्रज में जन्म लैवे की कामना करै हैं—

केकी जो बनावै तौ बनैयो बनराज जू कौ,
कूक कूक नाच नाच सुजस सुनाऊं मैं।
लता - द्रुम बेली रंगरेली जो करौ तौ करौ,
रावरे ही अंगन पै पुष्प झर लाऊं मैं॥
जो पै रज रेनुका बनावौ मन भावै ये ही,
तौ पै पद पंकजन सीस पै धराऊं मैं।
ये ही वर पाऊं ललचाऊं सुख साधे राधे,
वास दै निकुंजन कौ तैरौ ही कहाऊं मैं॥

धन्य जे ब्रज जहाँ परमेस्वर हू अवतार धारन करकै पधारै। जहाँ वह प्रति छन कन कन में वास करै और रिसि मुनी भक्त सब वाही की छवी कू कन कन मैं निहारिकैं आनन्दित होयं।

—:❀:—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीकृष्ण-लीला-स्थल

गोकुल

गोकुल ब्रज कौ वो भागसालो स्थल है जहाँ भगवान ने स्वयं रहिबे की इच्छा प्रकट करी। कंस के कारागार में जनम लेते ही पहलौ वाक्य उनके श्रीमुख ते निकस्यौ हो—

"यदि कंसाद् विभेषि त्वं तर्हि मां गोकुलं नय।"

भगवान वसुदेव जी ते कहै हैं कि अगर आपकू डर लगे तौ मोय गोकुल लै चलौ। वसुदेव जी वा घनी अंधेरी बरसाती रात में भगवान कृष्ण कू सूप में रखकै उफनती जमुना कू पैदर ही पार करकै गोकुल लाये और वहाँ नन्द जी की स्त्री जसोदा जी के पास पलंग पै कृष्ण भगवान कू लिटा दियौ और जसोदा की कन्या योगमाया कू लै कै मथुरा चले आये। नन्द और जसोदा कू जा चरित्र कौ पतौ भी नांय चल्यौ। विनने समझी कै हमारे यहां लाला ने ही जनम लियौ है। जा प्रकार ते भगवान कृष्ण गोकुल में नन्द बाबा के घर में पलवे लगे। वहाँ ही उनने मट्टी खाई, मैया कू अपने मुख में ब्रह्माण्ड कौ दरसन करायौ, माखन खायौ, दही लुटायौ, मोर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मर्कटन कू खवायौ, गोपीन कू सतायौ और विनकी गारी खाई। व्रज के प्रसिद्ध कवि लाल बलबीर जी ने जा लीलाकौ बड़ौ ही सुन्दर बरनन कियौ है। गोपी मैया जसौदा ते लाला कन्हैया की करतूतन की शिकायत कर रही है :—

ग्वालन कौ संग लै गयौ री धँस गेह मेरे,
टेर लिए केकीगन मर्कट अपारी री।
खाये दधि माखन लुटाए, फैलाये आय,
फोर डारे वासन लै किये ढेर द्वारी री॥
लाल बलवीर भलौ जायौ री सपूत पूत,
खोल दिये धेन बच्छ बन कौ हंकारी री।
हारी हम गोकुल के वास कौं करेंगी ना,
कहां लौ सहेंगी याहि देंगी अब गारी री॥

गोपी की गारी देबे की धमकी कू सुनिकै जसौदा मैया कौ हियौ काँप जाय है। बड़े जप तप करकै तो लाला पायौ है, वाको अनिष्ट कैसे सुन सकें। गोपीन ते मैया कहै—

पूजे कुल देवी देव सुकृत अनेक कीने,
याही के प्रताप सुत वृद्ध वैस पायौ री।
नव लख धेनु मेरे अपर अनेक राजै,
दूध दही माखन कौ कौन सौ घटायौ री।
लाल बलवीर बीर भूल ना विलम कीजै,
दूनों भर लीजै री इतेक जितौ खायौरी।
दोऊ कर जोर नन्दरानी कहैं गोपिन ते,
गारी मति दीजो मो गरीवनी कौ जायौ री।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक पुराण और उपनिषद, संहिता आदि में गोकुल के माहातम को उल्लेख मिलै। पद्मपुराण, हरिवंश पुराण, बृहद वाराह पुराण, अग्नि पुराण, ब्रह्म वैवर्त पुराण, श्री मद्भागवत महापुराण, श्री कृष्णोपानिषद, गोपाल तापनी उपनिषद और गर्ग संहिता आदि में गोकुल की बड़ी महिमा मिलै है। श्रीमद् भागवत महापुराण में लिखौ है—

तद् भूरि भाग्यमिह जन्म किमप्यटव्याम्।
यद् गोकुलेऽपि कतमांघ्रि रजोभिषेकम्॥

(श्रीमद् भागवत महापुराण)

श्रीमद् बल्लभाचार्य द्वारा स्थापित पुष्टि मार्ग में श्रीमद् गोकुल को अत्यधिक महत्त्व है। बालक कृष्ण को नन्दराय के घर प्राकट्य सुनिकै ब्रज के लोग लुगाइन के हृदय के आनन्द की धारा सिगरे गोकुल में बहबै लगी।

जा सम्प्रदाय में मानौ जाय है कै प्रभु कौ अवतार धारन करिवै को प्रयोजन है, निःसाधन जन कौ उद्धार। आचार्य चरण श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध की जन्म प्रकरण की कारिका में कहे हैं—

"निःसाधन फलात्मयं प्रादुर्भूतोऽस्ति गोकुले।"

गोकुल में नन्द यशोदा के घर में प्रभुनकौ प्रागट्य निः साधन जीवन कू पाय फल प्राप्त कराइवे कू भयौ है। जिन जीवन कू अपने बल कौ तनिक हू गुमान नाहें, प्रभु की अनुग्रह-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृपा कू ही सब कछु समझकै स्नेह ते भाव पूर्वक प्रभु की सेवा करें वे ही निःसाधन जीव हैं। ऐसे निःसाधन जीवन कू भगवान कृष्ण गोकुल में प्रकट भये। जाते जा सम्प्रदाय में बाल गोपाल की ही सेवा करी जाहैं।

गोकुल की लीला नन्द महोच्छव ते प्रारम्भ होय। लाला कन्हैया के जन्म के उपलक्ष में गोकुल में महोच्छव कियौ गयौ। जामें सिगरे ब्रजवासीन के उर कौ आनन्द छलक परौ। नन्द बाबा नैं अनेक रत्न, धन और गौ दान किये। आज हू जा उच्छव पै सिगरौ गोकुल जे गाइकैं झूम उठै—

नन्द के आनन्द भये जै कन्हैया लाल की।
हाथी दिये घोड़ा दिये और दीनी पालकी॥

जा आनन्द कू देखकै कवि मुकन्द हू आश्चर्य करें—

पूत भयौ बसुदेव के यहां।
और नौबत बाजै नन्द के द्वारे।

श्रीमद् भागवत के १८ श्लोकन में जा गोकल उच्छव कौ बरनन श्री शुकदेव जी महाराज ने कियौ है। गोकुल की अन्य लीला पूतना बध, शकटासुर, तृणावर्त उद्धार, गर्गाचार्य द्वारा लाला कौ नामकरण संस्कार, रिंगन लीला, उलाहनौ लीला, मिट्टी खाई, ऊखल-बन्धन, यमलार्जुन उद्धार आदि हैं।

महाप्रभु बल्लभाचार्य जी के काल में गोकुल में दस श्री विग्रहन की सेवा प्रारम्भ भई। इनकू निधि कह्यौ जातौ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हौ। बाद में इन दसों निधिन कूं गोसाई विट्ठलनाथ जी ने अपने सात पुत्रन कू जिन्हें लाल जी कहैं, सेवा के ताई सौंप दियौ—

सात गुसाई दस प्रभु सेवत चित्त लगाय।

कछु काल बाद गोकुल में सप्त पीठन की स्थापना भई। संवत् १६३७ विक्रमी की माघ शुक्ला दसमीं कू गोकुल में सात स्वरूपन के मंदिरन के निर्माण कौ मुहूर्त भयौ। वे सात स्वरूप हैं—

(१) मथुरेश जी (२) गोविन्द जी
(३) बालकृष्ण (४) द्वारकेश
(५) गोकुलेश (६) कल्याण प्रभु
(७) मदन मोहन।

इनमें ते कछु स्वरूप अब बाहर पधार गये हैं। अब गोकुल के ऐतहासिक स्वरूप की चर्चा करें। मैगस्थनीज ने सूरसेन के दो महानगर मैथोरा (मथुरा) तथा क्लीसोवोरा (कृष्णपुरा) कौ उल्लेख कियौ है। फाह्यान और ह्वेनसांग यात्रीन ने लिखयौ है कै जमुना के दौनों किनारे बस्ती हतीं। जाते क्लीसोवोरा कू गोकुल मानों जाय सकै। मुस्लिम शासन काल में बिनके आक्रमणन के कारण गोकुल ध्वस्त है गयौ। ता समै सुदूर दक्षिण भारत ते चल बल्लभाचार्य जी ब्रजयात्रा करवे पधारे और गोकुल कौ अनुसंधान कियौ। श्री जमुना जी ने विनकू स्वयं बतायौ कै जमुना के तट पै जहां छौंकर कौ वृक्ष है, तहाँ गोविन्द घाट कौ प्राचीन लीला स्थल है और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाके निकट को भाग गोकुल है। अतः संवत् १५५० की श्रावण शुक्ला एकादशी को गोकुल के गोविन्द घाट पै बल्लभाचार्य जी ने पुष्टि - मार्ग की स्थापना करी। तभी ते गोकुल बल्लभ सम्प्रदाय कौ केन्द्र बन गयौ।

गोसाई विट्ठलनाथ जी के काल में गोकुल कौ बहोत उत्कर्ष भयौ। बादशाह अकबर ने गोसाई जी कू गोकुल की भूमि माफी में दै दई। बादशाह विनते बड़ों प्रभावित भयौं। बादशाह अकबर ने गोसाई विठ्ठलनाथ जी कू मारफते आगाह (ब्रह्मवेत्ता) की उपाधि प्रदान करी। तबते आज तक गोकुल को महत्त चलौ आ रह्यौ है।

गोकुल के कछु प्रमुख दर्सनीय स्थल जा प्रकार ते हैं :—

(१) मन्दिर नंद भवन, (२) मन्दिर वासुदेव
(३) मन्दिर योगमाया, (४) मन्दिर वसुदेव आगमन
(५) मन्दिर पूतना वध, (६) मन्दिर माटी खाई
(७) मन्दिर माखन चोर, (८) मन्दिर ऊखल बंधन
(९) ठकुरानी घाट, (१०) नन्द घाट
(११) यशोदा घाट, (१२) गोकुलेश्वर महादेव
(१३) गोकुलनाथ जी को मन्दिर
(१४) महाप्रभु जी की बैठक।

भगवान कृष्ण की बाल लीलान कौ साक्षी है गोकुल। जाकी रज को भगवान ने चाख्यौ है, सरीर में लिपटायौ है,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जामें गऊ चराई हैं, बंशी बजाय बजाय कैं गऊन कू टेरौ है, माखन खायौ है-मटकी फोरी है। जाही ते रसखान कू गोकुल बहुत प्रिय है। मुसलमान होते भए भी वे तो गोकुल पै फिदा हे, वे कहैं—

मानुस हौ तो वही रसखान,
बसौं नित गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हों तौ कहा बस मेरौ,
चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।

गोकुल के आकरसन ते बँधौ हर जीव गोकुल कू ही ढूँढतौ ही फिरै। गोकुल की गैल पूछतौ एक भक्त कहै—

जग हेरत हार थक्यौ न मिलौ,
अब तौ हिय धीरज नैकु बंधाइ दै।
सुन आयौ हौ गाय चराइ रह्यौ,
वह कौन सी पौर है ताहि दिखाइदै।
कर लौठी लिए मतवारे अरे,
कवि प्रीतम की अभिलाख पुराइ दे।
ब्रजवासी ओ ग्वाल बटोइया रे,
मोहि गोकुल गाम की गैल बताइ दै।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर जीव की अभिलाष बस ये ही है—

नंद महल की छवि निरख लख बल्लभ को गेह,
झाँकी गोकुलनाथ की करूँ सुफल निज देह।
करूँ सुफल निज देह दृष्टि वा छवि पै टांकी,
जुगल स्वामिनी दूहु ओर चितवनि पुनि बांकी।
कवि, सरोज हिय बसौ भावना सदा टहल की,
करत चाकरी रहौं सदा हौ नंद महल की।

धन्य है गोकुल जाके ताई हर जीव ललकतौ रहे और ललकै हू क्यों नाय बाकी रज तौ भगवान ने हू लपेटी हो-खाई ही। जा रज के प्रभाव ते ही ब्रज कौ तत्व प्रकासित होय। श्री आनन्द बल्लभ शर्मा 'सरोज' कहैं—

रमन रेत मे लोट लै कर जमना जल पान,
तब जानैगौ मूढ़ मन ब्रज कौ तत्व महान।
ब्रज कौ तत्व महान मोहिनी माखन माटी,
सुधामयी लखि स्वयं स्याम जिह्वा सौं चाटी।
कवि 'सरोज' क्यों करै कृपनता नाम लेत में,
इत उत बिरथा भ्रमै रह्यौ कर रमन रेत में॥

जा ते जे गोकुल महान है। ब्रज तत्व कौ प्रकासक है।

□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रज के नव निर्मित देवालय

आनन्द कन्द श्री कृष्णचंद्र नें मथुरा में जन्म लियौ हो। गोकुल में जाइकै नंदबाबा के घर पलना झूले। मैया जसोदा के हाथन ते माखन रोटी खाईं। फिर राक्षसन के उत्पातन ते बचाइवे कू अपने लाला कन्हैया कू नंद - जसोदा सिगरे गोप - गोपीन समेत विन्दावन चले गए। वहां पहुँच कैं भगवान श्री कृष्ण नै सिगरे व्रज मंडल में अनेकानेक बाल, किशोर लीला करीं। जाते मथुरा और सिगरौ व्रज - मंडल तीर्थ बन गयौ। आज हू भक्त जन इन तीरथन में निवास करिकै, भजन उपासना करैं और अपने जीवन कौ लाभ प्राप्त करैं। भगवान कृष्ण सौं संबंध के कारण वज्रनाभ जी के युग ते ही व्रज में श्री कृष्ण के अनेकानेक मन्दिरन के निर्माण की परम्परा चली आ रही है। व्रज - मंडल में अनेक नए मन्दिरन कौ निर्माण हू भयौ है जामें भक्तजन भजन पूजन कथा कीर्तन करिकै श्री कृष्ण - प्रेम की प्राप्ति करै हैं।

मथुरा नगर में वृन्दावन मार्ग पै श्री गीता - मंदिर सेठ श्री जुगलकिशोर बिरला ने बनवायौ है। यह मन्दिर बहुत बड़ौ और आधुनिक शैली कौ बनौ भयौ है। जाकू बिरला मंदिर कहै हैं। जा मन्दिर की कछु प्रमुख विसेसता है। एक यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यसमाजी, सनातन, हिंदू, हरिजन, जैन, बौद्ध, सिक्ख सबके प्रवेस के लिए खुलौ है। हमारी राष्ट्रीय एकता कौ द्योतक है। दूसरे पुराण आदि विभिन्न ग्रंथन ते उदाहरण दै कै जा मन्दिर में शिलालेख और शिला चित्रन के मध्यम सौं स्पष्ट कियौ गयौ है कै हरिजन कौ मन्दिर में प्रवेस धर्म सम्मत है। जासै सभी धर्मन के बीच प्रेम बढ़ाइवे कौ प्रयास कियौ गयौ है। मन्दिर में विसाल जगमोहन में पुराणन में भगवान की अनेक लीला के चित्र सिला पै अंकित हैं। चक्र सुदर्शन धारी भगवान कृष्ण की बहुत वड़ी प्रतिमा है। अर्जुन कौ विसाल रथ मन्दिर के दाईं ओर के उद्यान में बनायौ गयौ है; वामै गीता जी विराजमान हैं। वाके पास ही एक अन्य स्तम्भ पै गीता के अठारह अध्याय के श्लोक खुदे भए हैं। जा विसाल मन्दिर कौ उद्घाटन महाराजा धौलपुर ने सन् १६४७ में कियौ।

मथुरा कौ दूसरौ नयौ बनौ मुख्य मन्दिर श्री केशवदेव मन्दिर है जो श्री कृष्ण जन्म भूमि कटरा केशवदेव पै बनौ है। जहां वज्रनाभ जी के जमाने ते ही भगवान केशव कौ मन्दिर रह्यौ है। पर आक्रमणकारीन ने कई बार वाकू ध्वस्त कर दियौ। पुरातत्व वेत्ता मानै हैं कै यहीं पै भगवान कृष्णचन्द्र कौ जन्म भयौ। सन् १६१० ई० में ओरछा नरेस राजा वीरसिंह देव ने ३३ लाख रु० व्यय करके जो भव्य मन्दिर बनवायौ हौ वाहै सन् १६६६ ई० में औरंगजेब ने तोड़ दियौ। अब वाही जगह पै लगभग तीनसौ बरस बाद श्री केशवदेव के मन्दिर के नाम सौं श्री कृष्ण-मन्दिर बनौ है। जाकौ उद्घाटन श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार ने कियौ। कटरा केशवदेव पै बनी ईदगाह मसजिद के पीछे के स्थान कू कृष्ण चबूतरा कहैं जापै एक संगमरमर कौ बरामदौ बनवायौ गयौ। जाकौ संगमरमर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सिलान में भगवान कृष्ण की छवि प्राकृतिक रूप ते उभर आई हैं। तहां संगमरमर की छवी बनी भई है। सरद पूनौं की चांदनी में जाकी सुन्दरता देखते ही बनै। सं० २०१९ वि० में जाकौ निर्माण भयौ। जा ही वरामदे के नीचे खुदाई में गर्भ - गृह मिल्यौ है, जो लाल पत्थरन कौ है। यह प्राचीन मन्दिर कौ ही अंश है।

श्री मद्‌भागवत भगवान श्री कृष्ण को वाङ्मय विग्रह है। वाराणसी के मानस - मन्दिर के अनुरूप ही भागवत भवन कौ निर्माण कृष्ण जन्मभूमि पै भयौ है। जा मन्दिर में ताम्र-पत्रन पै सम्पूर्ण भागवत अंकित है। सन १९५६ ई० में जा मन्दिर कौ निर्माण प्रारम्भ भयौ। सन् १९८२ ई० में मन्दिर पूरौ भयौ। जामें राधा - कृष्ण मुरली मनोहर वेस में मध्य में विराजमान हैं। परिक्रमा के दोनों ओर भगवान जगन्नाथ और राम - लक्ष्मण जानकी के मन्दिर हैं। जाके सामने हनुमान जी कौ और वाके बराबर महादेव जी कौ और जाके सामने दुर्गाजी कौ मन्दिर है। दुर्गाजी के बराबर चैतन्य महाप्रभु भगवान जगन्नाथ माऊँ मुख करके खड़े हैं। मन्दिर जगमोहन में सिगरी कृष्ण लीला चित्रित हैं। मन्दिर की प्राचीर पै गरुड़, नन्दी, सिंह आदि की आकृति हैं। जा प्रकार यह बड़ौ विसाल भव्य मन्दिर है। जाकौ सिखर गगन चुम्बी है। मन्दिर ते नीचे श्री कृष्ण शोध पीठ के बराबर सचल मूर्ति हैं, जिनमें अनेक पौराणिक कथा दरसाई गई हैं।

मथुरा कौ एक अन्य प्रमुख मन्दिर वृन्दावन मार्ग पै स्थित गायत्री तपोभूमि में श्री गायत्री जी कौ मन्दिर है। गायत्री वेद माता हैं। इनके करकमलन में वेद हैं और अमृत घट है। हंस पै विराजमान हैं। बड़ौ सुन्दर मन्दिर है। जाकौ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्माण वेदनिष्ठ तपोमूर्ति पं० श्रीराम आचार्य ने कियौ है। जामें एक यज्ञशाला है जामें नित्य गायत्री मंत्र ते हवन होय। समग्र भारत में गायत्री जी कौ यह एकमात्र अनूठौ मन्दिर है। अनेक सांस्कृतिक विधि, विद्यालय, गायत्री साहित्य कौ प्रकाशन आदि हू होय है। भारत ही नहीं विश्व में वेद और गायत्री कौ यहाँ ते बड़ौ प्रचार भयौ है।

आके उपरान्त मंडी रामदास, मथुरा में गोपेश्वर महादेव कौ मन्दिर बनौ है, जामें भगवान राम लक्ष्मण जानकी और हनुमान जी के विग्रह हू हैं। डोरी बाजार में महालक्ष्मी कौ मन्दिर नयौ बनौ भयौ है। जामें महालक्ष्मी जी की उपासना है। बम्बई के सेठ नत्थीप्रसाद जी ने जाए बनवायौ है। रंगेश्वर मन्दिर तिलकद्वार पै उदासीन संप्रदाय कौ कृष्ण-बलराम कौ मन्दिर है। ये रमणरेती महावन वारे कार्ष्णी महाराज कौ मन्दिर है। जामें कृष्ण और बलराम कौ बड़ौ चित्ताकर्षक शृंगार होय है। तिलकद्वार पै ही केशव गौड़िया मठ कौ मन्दिर है। जो अब बड़ौ भव्य बन गयौ है। जामें दीवारन पै कृष्ण लीला और चैतन्य महाप्रभु की लीलान कौ बड़ौ सुन्दर चित्रांकन भयौ है। जाके उपरान्त कृष्णानगर में भगवान कृष्ण कौ बड़ौ सुन्दर मन्दिर बनौ है। पाकिस्तान बनवे के बाद वहाँ ते आए हमारे भइयन ने अपनौ उप नगर कृष्णानगर बसायौ, वाही में अपने धन ते यह मन्दिर बनवायौ है। भूतेश्वर पै श्रीजी बाबा महाराज ने विशाल मथुराधीश कौ मन्दिर बनवायौ है।

अब वृन्दावन के नवनिर्मित देवालयन की चर्चा करें। मथुरा ते जाते समय मार्ग में पागल बाबा कौ बड़ौ भव्य और ऊँचौ मन्दिर है, लीलानन्द ठाकुर कौ। सफेद संगमरमर कौ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनौ है। अटलवन परिक्रमा मार्ग में श्री हरिदास सेवा संस्थान कौ हरिदास जी कौ मन्दिर, गोरे दाऊजी, नीमकरौरी बाबा कौ हनुमान जी कौ मन्दिर और बैरागी बाबा कौ मन्दिर अच्छे बने भए हैं। बाते आगे श्री श्री आनन्दमयी मां कौ छलिया ठाकुर कौ मन्दिर बड़ौ नयनाभिराम भव्य बनौ है। मोतीझील आनन्द कानन में स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती के मन्दिर में नृत्य गोपाल की बड़ी रमणीक छटा है और शिवजी कौ भव्य मन्दिर है। वाते आगे रमणरेती मार्ग पै रामजिवाई कौ मंदिर हरमिलाप जी कौ मन्दिर, साधुवेला और साक्षी गोपाल के सुन्दर मन्दिर बने हैं। रमणरेती में अंग्रेजन के मन्दिर के नाम ते कृष्ण - बलराम कौ मन्दिर आधुनिक शिल्प कौ उत्कृष्ट नमूना है। स्वामी ए. सी. भक्ति वेदान्ताचार्य ने जाकौ निर्माण करायौ। कृष्ण - बलराम के अतिरिक्त, राधा - कृष्ण और निताई गौर के दर्शन हैं। आज हू अमरीकन जाकी पूजा करें। राधाबल्लभ के पास आनन्दमयी कौ आनन्द बिहारी कौ मन्दिर, ब्रह्मकुण्ड पै मानस - मन्दिर और गोदा - विहार मन्दिर है। गोदा - विहार में हिंदू धर्म के ऋषि, मुनि, राजा, संत, नरेश, देवता, नवग्रह, सभी की मूर्ति स्थापित हैं। आजादी की लड़ाई के नेतान के हू चित्र हैं। एक प्रकार ते विश्वकोश ही है। बड़ौ भव्य मन्दिर है। जिनके अलावा अनेक मन्दिर बनते ही रहैं इनकौ नाम गिनानौ संभव नाहैं।

श्री गोवर्धन में मुखारविंद के पास महाराज भरतपुर ने लाल पत्थर और संगमरमर कौ श्री गिर्राज जी कौ बड़ौ भव्य मन्दिर बनवायौ है। राधा कुण्ड में गौर - धाम में निताई - गौर और राधा - कृष्ण कौ विशाल मन्दिर है जामें विद्यालय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्पताल, कृषि फार्म, साहित्य - प्रकाशन की व्यवस्था हैं। राधाकुण्ड के बाहर फैला मैया कौ मन्दिर नहर के पास है। गाजीपुर (बरसाना) में बिहारी जी कौ मन्दिर और पारासौली में पं. गोपाल प्रसाद व्यास कौ बनवायौ सरस्वतीजी कौ रमणीक मन्दिर है। अन्य स्थानन की तुलना में मन्दिर-निर्माण में वृन्दावन सबसे आगे है। यहाँ भक्तजन निरन्तर मन्दिर बनवाते ही रहैं।

□

जै जै श्री मथुराधीस।
भूतेसर पै आय विराजे सकल जगत के ईस।
संख, चक्र औ गदा पद्म कर मोर मुकुट धरे सीस।
उर बनमाल रुचिर नग माला नख पै धरे गिरीस।
'श्याम' सलौनौ रूप मनोहर भक्तन देंय असीस।

× × ×

अनुपम सोभा बरनि न जाय।
नील कमल पै पीत परागन छवि लखि मन हरसाय।
गहरे जल बिच मीन कलोलत सुक बैठ्यौ तहँ आय।
अरुन दलन महं बिंबा फल लखि उर में रह्यौ ललचाय।
'श्याम' सलौनौ रूप सरोवर आनंद रह्यौ उमगाय।

—राधेश्याम अग्रवाल

□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रज की रसमई होरी के लोकगीत

ब्रज की रसमई रंग रंगीली होरी दुनिया भर में मसहूर हतै। भगवान क्रिष्न के समै ते ही प्रचलित जा उच्छव कू आज हू ब्रजवासी वाही राग - रंग, मौज - मस्ती, हँसी - मजाक, गीत - संगीत, हाव - भाव ते मनाएं हैं। राधा - क्रिष्न गोपीन के बीच खेली गई जा होरी कौ रस ब्रज में आज हू छलक्यौ परै।

ब्रज में बसन्त - पंचमी ते ही मस्ती छाइबे लगै। गाम गाम में ढप बाजवे लगैं। ढप पै थाप पड़ते ही ब्रजवासी गाय उठैं—

होरी आई रे बसंता ढफ लै लें।
होरी आई रे।
ढफ के संग मजीरा लै लै और लै लै खरताल-
होरी आई रे।

फागुन कौ महीना ब्रजवासीन कू मस्त कर देय है। विनके मन तन में उमंग भरि भरि जाय है। वे सोचे हैं कै

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितनौ रस लूट सको सो लूट लो आगे होरी कौ औसर मिलौ या न मिलौ—

मस्त महीना फागुन कौ कोई जीवै सो खेलै होरी फाग।

और ब्रज बालान कौ लावण्य विन्हें मोह लेय है—

मुख पै ढिठी बिंदगी सोहै जाके झुमका पै अजब बहार।
नाक चुनी नथ बेसर सोहै तेरे कठुला पै अजब बहार।।

जा मादकता कौ ही जे प्रभाव परै कै समसान के बासी भोले बाबा हू ब्रज में होरी खेलिबे आइ जाहैं। परन्तु ब्रज ललना तौ विनके रूप - सरूप कू देखिकै दूर ते ही नमस्कार कर दैय—

को होरी खेलै रे तोसे बाबरिया के संग।
अंग भमूत, गले विष माला तेरी लटन में गंग।।

होरी के रंग में रंग जाय है सिगरौ ब्रज मंडल। होरी में बरजोरी हू चलै। राजी ते तौ राजी ते, नांय तौ गैर राजी ते होरी खेलनी ही परै—

आज बिरज में होरी रे रसिया।
होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया।। आज०।।
कौन के हाथ कनक पिचकारी।
कौन के हाथ कमोरी रे रसिया।। आज०।।
क्रिष्न के हाथ कनक पिचकारी।
राधा के हाथ कमोरी रे रसिया।। आज०।।
अपने अपने घर ते निकसी।
कोई सांवरि कोई गोरी रे रसिया।। आज०।।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़त गुलाल लाल भए बादर।
केसर रंग में बोरी रे रसिया ।। आज० ।।

गोपीन नें क्रिष्न कू घेरि लियौ और लगी फाग मचाइबे, अब तौ क्रिष्न कू कैसे हू नाय छोरिंगी—

होरी खेलन आयौ स्याम आज जाहि रंग में बोरौ री।
कोरे कोरे कलस मंगाए रंग केसर घोरौ री।
रंग बिरंगौ करौ आज कारे ते गोरौ री। होरी०
पार परौसिन बोल याहि आंगन में घेरौ री।
पीताम्बर लेउ छीन याहि पहराय देऊ चोली री।
हरे बांस की बांसुरिया जाहि तोरि मरोरौ री।
तारी दै दै याहि नचावौ अपनी औरौ री।
'चन्द्र सखी' की यही बीनती करै निहोरौ री।
हा हा खाय परै जब पैया तब याहि छोरौ री।

मदमाती ग्वालिनन कू होरी की मस्ती में मस्त देखकै क्रिष्न हू नाय घबराए। कहैं—

ठाड़ी रह ग्वालिन मदमाती।
जे औसर होरी कौ है री हम तुम खेलें संग साती।
भूलि गई घर गैल हमारी लै लगाय अपनी छाती।
'पुरुषोत्तम' प्रभु की छबि निरखत, ब्रज बनिता सब गुन गाती।।

भगवान क्रिष्न राधा जू ते होरी खेलिबे आइबे की बीनती करै हैं—

दरसन दै निकसि अटा में ते – दरसन दै।
हम जानी तुम चन्द चकोरी – कोइल सी कूकत हौ गोरी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम तुम चलैं सांकरी खोरी । दरसन दै निकसि अटा में ते
अरी तेरे माखन झरत लटा में ते। दरसन दै
घूंघट पट दै ओट किसोरी–मृदु मुसकाइ जाउ कित कोरी।
दरसन देहु प्रिय रस बोरी–अरी जैसै निकसै चंद घटा में ते
दरसन दै।

और गोपी तौ होरी खेले बिना रहै कैसे। साल में एक बार ही तौ होरी आवै। जा औसर के आनन्द कू कैसै छोरै—

एरी मेरौ बरस दिना कौ कौल श्याम ते खेलौंगी होरी।
परिकें मारि गयौ पिचकारी हाथ न आयौ छलिया दारी ॥
आजु सामनें परचौ खिलारी अब लेंउगी सब कसर निकारी।
ला मेरौ लाल रेशम कौ अण्टा का देखै भोरी ॥
एरी मेरौ।

गोपी जब होरी खेलिबे लगी तौ स्याम ने ऐसी बरजोरी करी कै गोपी तनमन ते सिगरी रंग गई—

रंग में रंग दई बांह पकरि लई लाजन मरगई होरी में।
इकली भीज दई होरी में हुरमत लाज गई होरी में ॥
चूंदर रंग बोरी होरी में पिचकारी मारी होरी में।
हे कै स्याम निसंक अंक भुज भरि लई होरी में ॥
गाल गुलाल मल्यौ होरी में मोतिन लर तोरी होरी में।
लोक लाज खूंटी पै कान्हा धरि दई होरी में ॥
बरजोरी कीन्ही होरी में ऐसी बुरी भई होरी में।
'घासीराम' पीर सब तन की हर लई होरी में ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जे रसमई होरी खूब मचिवे लगी—

वृन्दावन फाग मच्यो भारी ।
वृन्दावन की गोरी नारी टूटे सार फटे सारी ।
ब्रज की होरी, ब्रज की गोरी, ब्रज की श्री राधा प्यारी ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखत तन मन धन सरबस वारी।।

फागु के अनन्तर गोपीन कू फगुआ लेबे को हक बने। वे स्याम ते फगुवा हू मांगें और गारी हू सुनावें—

फगुआ दै मोहन मतवारे ।
ब्रज की नारी गावत गारी तुम द्वै बापन बिच वारे ।
नंद जू गोरे जसुमति गोरी काहे आप भये कारे ।
'पुरुषोत्तम' प्रभु की छबि निरखत गोप भेष लिए अवतारे ।

होरी को जे रस रसिया, जिकड़ी भजन, साखी, चौपाई, तान में भर्यो परो है जब जे गाए जाहैं तो अनोखो समां बंध जाय है और राधा-कृष्ण की होरी को दृश्य मानस पै अंकित है जाय। हर नारी अपने कू गोपी समझिबे लगै और पुरिष कृष्न और जा प्रकार ते निरन्तर होरी चलती रहै—रंग बरसतो रहै, रस उमड़तो रहै ।

□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेसू

टेसून के दिनान में बाजारन में टेसू खूब बिकै हैं। मट्टी के बने भये रंग बिरंगे इन पुतलान कू लैके बालक गाम गाम, गली गली, मोहल्ला मोहल्ला घूमते दिखाई परैं। संग में झांझी हू होवै। जामें दीपक जरौ रहै। सब मिलकै टेसू के गीत गामें और इनाम पामैं। जा घर या दूकान पै जामें तहां टेसू - झांझी के गीत गाइवे के पाछे बालकन कौ सम्मान कियौ जाय, बिनैं खाइवे कू मिठाई और इनाम में कछू पैसा रुपया दिए जांय।

टेसू नें हमारे समाज कू जोरि राखौ है। घर घर जाइवे ते आपस में प्रेम बढ़ै, निकटता बढ़ै, सम्पर्क बढ़ै। ऐसे ही जाते पहले सांझी हू ऐसौ औसर है जापै सब कन्या मिल जुल कै सांझी की रचना करैं। एक दूसरी के घर जामें सांझी के गींत गामें, सांझी कौ भोग लगामें, आरती करैं और भोग पामें। सांझी ते पहले डंडा-चौथ पै हू बालक डंडा बजाते घर घर धूमें। हरेक बिनकौ स्वागत करै। जा प्रकार ते जे सभी हमारी मजबूत सामाजिकता के प्रतीक हैं।

टेसू मिट्टी कौ बनौ पुतरा होय। बाँस की खपच्ची की तीन टांग पै खड़ौ बीच में दीवट, दीवट की एक खपच्ची पै टंगौ सिर, अगल बगल की दो खपच्चीन में झांझी और चिरैया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डटे रहैं। टेसू के सिर पै सुआफा बंधौ होय, सुआफा पै मुकट और चेहरा पै घुमावदार मरोड़ी भई मूंछ, जिनते वीरता टपकी परै। टेसू कू हरे, लाल, गुलाबी, सफेद रंग ते रग कै सजायौ जाय। बीच दीवट में दीपक रखौ जाय। दीपक के प्रकास ते रंग बिरंगे टेसू की सोभा एकदम न्यारी है जाय।

कुआर के सिराध पच्छ में संझा कू घर घर गोबर की सांझी तेरस तक रखी जाय, रोज नये ढंग ते बड़ी सजावट में सांझी बनै पर चौदस कू छोटौ कोट और मावस कू बड़ौ कोट बनायौ जाय। नित्त इनकी आरती होय, भोग लगै। सांझी के गीत गाए जांय। जाही प्रकार ते टेसू पै भी बालक संझा के समै दीपक जरावैं, भोग लगामें, सांझी मावस कू सिरा दई जाय और फिर नौरता में टेसून नें लैकै बालक घर घर टेसू के गीत गामते डोलें। टेसू कौ एक गीत आपकू मैं बताऊं। टेसू ए केसू भी कहैं—

केसूला घंटार बजइयो, दस नगरी दस गाम वसइयो
बस गए तीतर बस गए मोर
सरी डुकरिया ए लै गए चोर
चोरन के घर खेती भई
खाइ खाइ डुकरी मोटी भई
बाऊ कू लै गयौ बंडा लियारी
बंडा लियारी नें खीर पकाई
सबरे ग्वारिया नोति जिमाए
डुकरी बैठी क्यारी में
लिरिया बैठौ कूंड़ में
दै सारे के सूंड़ में।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कछू जने जा गीत कू ऐसैं हू गामें –

केसूरा घंटार बजइयो
दस नगरी दस गाम बसइयो
बसे बसाए कोर गली
इन कोर गलीन ते टके मंगइयो
इन गलियन में चिनते जइयो
चित मित कौ करौ सिंगार
सूमन के मुँह देउ अंगार
सूँम सोम तिहारी चतुराई
हाथी के डेरे लै गई काई
वा काई कौ बड़ौ तालाब
वामें पौढ़े टेसूरा
टेसूला की सात बहौरिया
मन मन पीसैं मन मन खामें
बड़े मल्ल से जूझन जामें
बड़े मल्ल की पतसुरी
बाते काटी अलापुरी
अलापुरी में सौ सौ तीर
एक तीर मोइ मांगौ दैं, मांगौ दैं रे मांगौ दैं
दिल्ली जाइ पुकारूंगो
दिल्ली कौ तौ कच्चौ कोट
जाइ परौ चूले की ओट
चूलौ मांगै नौ नौ रोट
एक रोट घटि गौ
चूलौ बेटा लड़ि गौ

टेसू के पीछे एक पौराणिक कथा हू छिपी भई है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेसू कू अर्जुन कौ पुत्र बतायौ जाए। जाकौ नाम बभ्रुवाहन हौ। पाण्डव जुआ में हारिकै जब वनवास के दिना बिताय रहे हे तभी अर्जुन कौ मणिपुर में चित्रांगदा ते व्याह भयौ। जाते बभ्रुवाहन कौ जन्म भयौ। किंतु अर्जुन कू अपने पुत्र के जन्म के बारे में पतौ ही नाय चलौ। जब महाभारत कौ युद्ध प्रारंभ भयौ तो बभ्रुवाहन ने दुरजोधन के पच्छ में लड़िबे कौ वचन दै दियौ। बभ्रुवाहन महाभारत में पहुँचौ और अट्टहास करिकै गरजौ। जाहै सुनिकै श्री कृष्न कू बड़ी चिंता भई। श्री कृष्न सब जान गए कै अगर जे महाभारत के जुद्ध में दुरजोधन की तरफ ते लड़ो तो हम नाय जीत पामिगे। बिननें अर्जुन कू बताय दियौ जे तुम्हारौ ही पुत्र है, किन्तु वचन भरिवे के कारन तुम्हारी ओर तें नाय लड़ैगौ। जाते दान में जाकौ सीस मांग लियौ जाय तौ भलेही हमारी विजय होय। अर्जुन और श्री कृष्न वेष बदल कै वाके पास गए और दान मांगौ। वाते तिरवाचा भरवाय लई। तिरवाचा भरिबे के बाद श्री कृष्न ने कही कै हमें तुम्हारौ सिर चाहिए। बभ्रुवाहन बड़ौ दुःखी भयौ। बानें कही कै मेरी महाभारत कू देखिबे की प्रबल इच्छा ही। अब मैं अपने बचन ते नहीं हट सकूं महाभारत कैसे देखूंगो। श्री कृष्न नें कही कै तेरी अभिलासा हम पूरी करिंगे। वानैं अपनौ सीस काटिकें दै दियौ। श्री कृष्न नें बाकू एक पेड़ पै टाँग दयौ। वहां ते वह सिगरे महाभारत कू देखतौ रह्यौ। जाही ते बास की खपच्चीन पै टेसू कौ पुतरा खड़ौ करौ जाहै। जे खपच्ची पेड़ की प्रतीक हैं।

टेसू कौ नरकासुर की कन्या झांझी से प्रेम हौ। वह वाते ब्याह करनो चाहतौ हौ। पर श्री कृष्न ने बाकौ सीस लै लियौ तौ ब्याह कैसे होय। जब श्री कृष्न कू यह पतौ लगौ तौ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिननें दोनोंन के पुतरा बनवाइकें ब्याह रचायो। जाते झांझी हू टेसू के संग रहै। दोनोंन के हीं गीत गाए जाहैं। टेसू के गीत हम बताय चुके हैं अब झांझी को एक गीत देखो--.

मां भैंया कहां ब्याहे परेवरिया
बेटा दिल्ली आगरे ब्याहे परेबरिया
मां भाभी कैसी आई परेबरिया
बेटा कौआ ऊ ते कारी आई परेबरिया
मां भाभी को मोहड़ो कैसो परेबरिया
नाक चना सी मौंह बटुआ सो घूंघट में मनताई परेबरिया
मां भाभी कैसो खाती परेबरिया
वेटा चका पै चका उड़ाती परेवरिया
मां पानी कित्तो पीती परेबरिया
बेटी घड़ा पे घड़ा झुकाती परेबरिया।

इन टेसू और झांझी के गीतन में निर्मल विनोद और चुहलबाजी की छटा बड़ी मनमोहक है।

पड़वा ते दसहरा तक टेसू के गीत गाइबे ते जो धन दच्छिना मिलें वाते खील बतासे खरीद के दसहरा या पूरनमासी कू टेसू कू पूजो जाए और दीप जरायो जाय, खील वतासे को भोग लगायो जाय। फिर काहू नदी या तालाब में बिन्कू सिराय दियो जाय।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेसू एक प्रकार कौ आमोद - प्रमोद कौ माध्यम हू है। क्वार में गरमी की तपिस कम है कैं हल्की हल्की ठण्ड आनौ चालू है जाय। नयी नयो अन्न की फसल तैंयार है जाय। सुहावनें मौसम और नए अन्न की प्राप्ति से मन में खुशी छा जाय। वाही खुसी के रंग में रंगे हमारे पर्व सफल होमें- सांझी - नौरता - टेसू - झांझी।

टेसू कौ पुतरा लोक कला कौ हू अच्छौ नमूना है। ब्रज में मट्टी के खेल खिलौना, मूर्ति, बर्तन बड़ो ही सुन्दरता ते बनाए जाएं। टेसू ते हमारीं संस्कृति के उच्च आदर्शन कौ हू बखान होय। टेसू को वीरता, त्याग, प्रेम और वचन पालन कौ उदाहरन अनौखौ है। हमें बाते इन गुणन कू सीखिवे की प्रेरणा मिलै। यदि हमारो समाज इन पै ध्यान देय तौ समाज में सुख - शांती कौ वातावरण बन सकैं। टेसू ने दूसरे के हित अपने प्राण त्यागे। जे परोपकार कौ भाव मानव - समाज के कल्यान के लिए बड़ौ आवस्यक है।

□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदासीन सम्प्रदाय : उपासना पद्धति

उदासी सब्द को प्रयोग भेष के अर्थ में सबते पहले गुरु नानक साहब नें अपने आदि ग्रंथ में कियो है :—

गुरुमुखि खोजत भए उदासी,
दरसन के ताई भेषु निवासी।

आदि - ग्रंथ ६३६.

गुरु नानक साहब निवृत्ति मार्ग के प्रचार के ताईं जात्रा करौ करते हे। विनकी जे जात्रा ही उदासी कहाती हीं। उदासी की रीति वा रहनी भी बिननें ही चलाई —

बावे भेष बनाया, उदासी की रीति चलाई।

(बाराभाई गुरुदास पृ० ४२४ पौड़ी)

संत रेण के नानक दिग्विजय ग्रंथ में भी उदासीं पंथ के आदि संचालक नानक साहब कू ही मानौ गयौ है। बारां भाई गुरदास के साक्ष्य ते हू यह प्रकट होय कै नानक साहब प्रत्येक उदासी (जात्रा) में एक विसेष भेष धारण करते हे यात्रा ते लौटिकें बाहे उतार देते।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबा आया करतार पुरि भेष उदासी सगल उतारा।
पहिर संसारी कपड़े मंजि बैठि किया अवतारा।

नानक साहब काहू विसेष भेष कू स्थापित नहीं करनौ चाहते हे। बिन्हें तौ जोगी के वेष ते गिरस्ती कौ वेष अच्छौ लगतौ। बिनके पुत्र श्रीचन्द जी महाराज जोग मार्ग की तरफ ज्यादा झुके भए हे। जाही ते गुरु नानक साहब नें बिन्हें अपनौ वारिस नहीं वनायौ। श्रीचन्द जी महाराज नें उदासीन सम्प्रदाय चलाय दियौ। पर बिनकें सिद्धान्त गुरु नानक साहब सौं न्यारे हैं।

भारत में ईश्वर की उपासना दो रूप में करी जाय है। निरगुन निराकार ईश्वर की और सगुन साकार ईश्वर की। प्रारंभ में उदासीन सम्प्रदाय में निरगुन निराकार ब्रह्म की उपासना ही प्रचलित ही। किंतु बाद में पंच देवोपासना भी प्रचलित हैं गई।

उदासीन सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक बाबा श्रीचन्द जी महाराज वेदन के समर्थक हे। बिनके अनुसार गुरु ही वेदन के बताए मार्ग कू दिखा सकें है। गुरु द्वारा बताए मार्ग पै चलिकै जीवात्मा माया के बंधन सौं छूटिकै निराकार के संग एकाकार है सकै - निराकार में मिलिकै मोक्ष प्राप्त कर लेय है। जा पंथ में अबिनासी सब्द कूँ ईश्वरवाचक मानौ गयौ है।

अविनासी प्रभु खेल रचाइया गुरु मुखि सोती होय,
उह अबिनासी पुरिस है सबमें रहया समोय।

बाबा श्रीचन्द जी महाराज ईश्वर कू ही अपनौ गुरु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानते है। दत्तात्रेय अवधूत की सबदी में अलख पुरुष कू ही गुरु स्वीकार कियौ गयौ है—

गुरु हमरे अलख पुरिष
खोलिए हिरदा पुस्तक पोथो।

किंतु महामण्डलेस्वर स्वामी गंगेस्वरानन्द जी महाराज ब्रह्मा जी के पुत्र सनक, सनन्दन, सनातन तथा सनत्कुमार कू जा पंथ के आदि गुरु मानैं हैं। बिननें इनते गुरु-परम्परा प्रारंभ कर अविनाशी मुनि कू बाबा श्रींचन्द जी कौ गुरु मानौ है। बाबा श्रीचन्द जी ने हू कह्यौ है—

गुरु अबिनासी खेल रचाया,
अगम निगम का पंथ चलाया।
गुरु अबिनासी सूछम
वेद निरवाण विद्या अपार॥

किन्तु कछू विद्वान अविनासी शब्द कौ अर्थ ईश्वर ही मानै हैं। जा पंथ में गुरु कौ बड़ौ महत्व मानौ जाव है। कहै हैं—

बिनु गुरु नर का भ्रम नहिं जाई,
चाहें कोटिन करहु उपाई।

क्यों कि—

राम कृष्ण से को बड़ा, तिनहू ने गुरु कीन,
तीन लोक के हैं धनी, गुरु आगे आधीन।

बाबा श्रीचन्द जी महाराज गुरु गोरखनाथ से बड़े प्रभा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वित है। नाथ पंथ कौ अत्यधिक प्रभाव उदासीन संप्रदाय पै दिखाई परै। ईश्वर प्रेरित स्वसंवेद्य अर्थात् स्वयं प्रकट भयौ ज्ञान ही जा पंथ में स्वीकार कियौ जाय। वैदिक संहिता मात्र ही वेद न मानी जांय। जाई लिए बाबा श्रीचन्द नें सूषम वेद शब्द कौ प्रयोग कियौ है—

सूषम वेद का भेद निराला, च्यारूं वेद विकारा।
जिन अच्छर सूं साइर पाटा सो सऊं का करतारा॥

यह सूषम वेद स्वसंवेद्य या स्वयं प्रकट ज्ञान का प्रतीक है। गुरु द्वारा ही यह ज्ञान प्राप्त होय।

निगम ऋषीन की धरोहर है और आगम मुनीन की। आगम और निगम दोनों ईश्वर प्रोक्त हैं। मुनि या अवधूत परम्परा आगमिक कही जाय। आगम और निगम में ओंकार समान तत्व है। अतः अवधूत आगमिक परम्परा कौ स्रोत गुह्य होइबे के कारण गुरु मुख मानै हैं। गुरु मुख प्रदत्त नाम ओंकार है। स्व संवेद्य मंत्र ओंकार ही है। ओंकार ही वेद तथा आगम कौ व्यंजक है। अतः जा ओंकार की उपासना करिकै मुक्ति लाभ करनो चाहिए। बाबा श्रीचन्द जी महाराज कहैं कै साधक कू निर्वाण पद की खोज में लगौ रहनौ चाहिए। शरीर कौ गढ़ जीतिबे पै ही स्व संवेद्य ज्ञान प्रकट होय और तब निर्वाण मिलै।

आश्विन कृष्णा नवमी, १८४४ वि. में श्री प्रीतमदास जी महाराज नें चारों धूणों तथा छहो बखशीशों के महन्तन कू इकट्ठौ करि पंच परमेस्वर उदासीन पंचायत अखाड़ेन कौ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापना करी ही। १८४५ वि० में प्रयाग में अखाड़े कौ विसाल भवन बन्यौ। बाबा प्रीतमदास जी नें ही पंच देव (ब्रह्मा, विष्णु, शिव, दुर्गा, गणेश) की उपासना प्रारंभ करिकैं उदासीन पंथ कू नाथ पंथी मान्यतान ते मुक्ति दिबाई। समन्वय साधना की दृष्टि ते उदासीन सम्प्रदाय में ब्रह्मा, हर, हरि, गौरी और गणेश इन पांचों देवतान की समान भाव ते उपासना करी जाय। जा पंथ के विद्यमान महामंडलेश्वर स्वामी गंगेश्वरानन्द जी महाराज नें समस्त विश्व में वेद - चतुष्टय की प्रतिष्ठा करी है।

जा पंथ के प्रमुख कवि संत रेण ने पंच देवोपासना के संबंध में लिख्यौ है—

चारों जौ महंत मानौं चारौं सनकादि आदि,
बिसनू सरूप गुरु ग्रंथ उर आनिए।
गुरु ग्रंथ बानी जोइ वेद रूप जानौं सोइ,
तिनमें ग्रंथी सो विरंचि रूप मानिए।
कारबारी जोइ दूजै बिजै असयानी सोइ,
कोतवाल तिन में सोइ नारद सयानिए।
कहैं कवि संत रेण दोऊ हाथ जोड़ करि,
पंच परमेश्वर कौ वंदना महानिए।

उदासीन संप्रदाय हू सगुण भक्ति धारा की रसमई गंगा में निमज्जित है गयौ। भगवान स्याम सुन्दर की रसमई लीला - समुद्र में डूब गयौ। पटियाला दरबार के संवत्

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९२० वि० के कवि संत रामदास जो नें लिख्यौ—

गोकुल बसैया, ब्रजभूमि कौ फिरैया बन,
धेनु कौ चरैया और भैया बलराम कौ।
काली कौ नथैया कौल कंस कौ दिवैया पांव,
सीस पै छुवैया जो दिवैया विषधान कौ।
गिरि कौ धरैया मान इन्द्र कौ मिटैया कोप,
केसी कौ दलैया जो कटैया अभिमान कौ।
रामदास कौ रखैया खानपान कौ खवैया,
नन्दराय जू कौ छैया है दिवैया सुरधाम कौ।

जा संप्रदाय के संतन नें ब्रज कौ पौराणिक महत्व स्वीकार कियौ और मानिबे लगे—

रमन रेत लोटचौ नहीं,
कियौ न जमुना पान।
रे मन तैं जान्यौ नहीं,
ब्रज कौ तत्व महान॥

आज उदासीन संप्रदाय के अनेक मन्दिर और अखाड़े हैं। ब्रज में हू अनेक हैं। उदासीन पंथ कौ मुख्य गुरुद्वारौ रामराय देहरादून में है। पूर्वी भारत में इनकी ३७० गद्दी हैं। सिंध, पंजाब, मध्यप्रदेश, राजस्थान में हू इनके महत्वपूर्ण स्थान हैं। जा प्रकार ते जे संप्रदाय बड़ौ संपन्न है और बहुत फैलौ भयौ है।

□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वल्लभ-कुल भूषण

गोस्वामी श्री रमणलाल जी महाराज

परम भगवदीय, परम वैष्णव, वल्लभ कुल - कमल - दिवाकर गोस्वामी श्री रमणलाल जी महाराज आजु ते कोउ १४० बरिस पहले मार्गशीर्ष कृष्ण एकम् संवत् १९०४ विक्रमी में अवतरित भए। पूज्य पिता श्री गुसाईं परसोत्तम लाल जी महाराज ने बिनकी शिक्षा-दीक्षा हेत दण्डी स्वामी श्री विरजानन्द जी महाराज कू बिनें सौंप दियौ। आप आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी महाराज के संग दण्डी घाट पै सिच्छा प्राप्त करते हे। गुसाईं घराने के होइबे के कारन सौं आप सिंहासन पै बिराज कै सिच्छा ग्रहण करते हे और स्वामी दयानन्द जी महाराज धरती पै बैठिकै सिच्छा ग्रहण करते हे। स्वामी विरजानन्द जी महाराज सौं प्रस्न कियौ गयौ कै आप जे भेदभाव क्यों करौ हौ। बिननें कही कि दयानन्द तो साधु है जाते जाकौ जमीन पै ही बैठिबौ उचित है।

दयानन्द जी तौ मूर्ति पूजा के विरोधी हे और मूर्ति पूजा के विरोध में हीं आपनै आर्य समाज को संगठन कियौ। गुसाईं जी तौ मूर्ति - विग्रह में हीं अपनौ सर्वस्व भाव रखते हे। वहुत दिना वाद जब दयानन्द जी मथुरा पधारे तो बिन्नै

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनौ विरोधी जानते भए हू विनकौ खूब सत्कार कियौ और अपने 'बहू जी के बाग' में विनें ठहरबे की आज्ञा प्रदान करी। जदपि परिवार के अन्य जन जाके पच्छ में नाहे। आप ऐसे पुण्य प्रतापी हे कै मरणासन्न कू जीवन कौ आसीर्वाद दियौ तो वो जीवित ही है गयौ।

श्री गुसाईं रमणलाल जी महाराज दो भाई हे। आपके बड़े भाई श्री लाल जी हे किंतु वे असमय में ही लीला प्रवेस कर गए। जाते मथुरा में छोटे मदनमोहन जी के मन्दिर के अधिपति आप ही भए।

आप परम भक्त, उत्कृष्ट विद्वान और भगवन् सेवा परायण धर्माचार्य हे। आपने गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के चतुर्थ पुत्र श्री गोकुलनाथ जी के विसिष्ट मत कू अंगीकार कियौ। आपने गोकुल में विराजमान श्री गोकुलनाथ जी की सेवा कौ विस्तार अपने सिष्यन में कियौ। अनेक भक्त "जै जै श्री गोकलेस" की मधुर धुनि सदैव करते रहते। आपनै मर्यादा कौ विसेष पालन कियौ। ठाकुरजी की सेवा में राखिवे ते पूर्व हर वस्तु कू जमनाजल सौं पवित्र कराते हे।

आप उच्च कोटि के विद्वान और ब्रजभाषा काव्य के मर्मज्ञ हे। आपने ब्रजभाषा में काव्य-रचना करी है और ब्रजभाषा के संग गुजराती, पंजावी, खड़ी बोली आदि भाषान में रचना करीं। आपकी अनेक गद्य-पद्यात्मक रचना मिलै हैं जिनमें पुष्टिमार्ग कौ सार भरयौ परयौ है। आपनें 'निज जन' 'निज दासी' आदि उप नामन कौ प्रयोग करिकै काव्य-रचना करी। आपकौ प्रमुख ग्रंथ है—रस-रसिक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्रह जो अब दुर्लभ है। जामें महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के वंस कौ वरनन है तथा गोकुलनाथ जी के स्वरूप कौ निर्णय सिद्धान्त सहित निरूपित है। जाके अतिरिक्त करेला, धौल, कवित्त, कीर्तन, पद आदि हू हैं। जे ग्रंथ पंजाबी, गुजराती, संस्कृत हिन्दी, ब्रज आदि अनेक भाषान में लिख्यौ गयौ हैं। बिनके अन्य ग्रंथ हैं—गोकुलेशाख्यान, सेव्यस्वरूप की वार्ता, और पुष्टि मार्गीय सार संग्रह।

पुष्टि मार्गीय सार - संग्रह में पुष्टि मार्गीय ज्ञान और फिलौसफी कौ विसद विवेचन कियौ गयौ है। आपने श्री गोकुलनाथ जी की भक्ति प्राप्ति करिबे कौ साधन निरूपित कियौ है।

'रस-रसिक-संग्रह' में आपनै गोकुलनाथ जी कौ स्तवन जा प्रकार सौं कियौ है—

अरे तू गोकलेस गोकलेस गारे।
श्री मदन मोहन वल्लभ पीय प्यारे।
गुणातीत अति अगाध शुद्ध अन्तरयामी।
ईश ईश आत्माराम पूर्ण गोस्वामी।
जगत गुरु जगत आधीश जीवन बहुनामी।
परमेस्वर प्रभू प्रधान अति अचिंत्य कामी।
अच्युत हरी सदानन्द परम तत्व रूप।
अचल सकल सार मोहन वर अनूप।
पुरुषोत्तम परमानंद नंद सुन्दरता रासी।
निज जन श्री कृष्ण नाम गोकुल के बासी।

जाही प्रकार सौं गोकुलनाथ जी के अवतार की भूमि,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोकुल की गैया और बिनके मधुर दूध कौ बरनन गुसाईं जी महाराज नें जा प्रकार सौं कियौ है—

बड़भागिन गोकल की गैया।
जिनके पय को पीवत हरि छैया।
ओटे पय में सरस मलैया।
मिश्री डारत स्वाद वड़ैया।
कर फेरत श्री ब्रज के रैया।
वात्सल करत सदा ज्यों मैया।
हरे हरे तृण सदा चरैया।
सेवा करत ग्वारिया भैया।
'निजदासन' को जानत छैया।

संवत् १९७५ वि० में आपनें प्रथम बार श्री गिरिराज गोवर्धन की तरहटी में सुरभि कुंड पै ठाकुर जी कौ छप्पन भोग धरायौ। जे परम्परा आज तक चली आ रही है। 'रस-रसिक संग्रह' में श्री गुसाईं जी नें जाकौ बरनन जा प्रकार ते करयौ है—

देवदमन, पुष्टि पुष्टि देव ये, जय श्री जी श्रीनाथ।
मुख्य सरूप गुसाईं जी कौ गिरि गोवर्धननाथ।
प्रथम सारस्वत कल्प में कृष्णचंद्र सर्वज्ञ।
अन्नकूट वोही विध सामग्री कीयौ गोवर्धन यज्ञ।

कहै हैं जे यज्ञ बड़ौ अद्भुत भयौ हो। आपने ठाकुर जी के भोग कौ एक अन्य छन्द में हू बरनन करयौ है—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल्लभ आरोगत पूरी टेंटी।
रजत कटोरा भरकै राखी। थार में सोधा जेटी।
साक, रायता, चटनी, चक्ता। थपरी धरी कछू छेटी।
तली, पकोरीं, बरी, मगोरी। हरी कचरी या लेटी।
साज तबकड़ी सनमुख गड़ी। भाग्यवान की वेटी।
निज दासी की आसा पूरो है गई मेटा मेटी।

गोस्वामी श्री रमणलाल जी महाराज जाति - पांति के भेदभाव कू हू नहीं मानते हे। चाहें उच्च हो चाहे नीच जो हू प्रभु की सरन में आय गयौ बाकौ उद्धार है गयौ। 'रस-रसिक' में आपनै लिख्यौ है

सूद्रादिक जे सरन आए तरे वो नर हो नार।
बड़े बिचले छोटे मोटे परम तत्व निरधार।
नाम सुमिरन श्री गुसाईं जी कौ सेबा जस विस्तार।
दास निज जन यही विनती प्रेम करो विस्तार।

जासों वे प्रेम - पंथ के दिव्य पथिक हे। बिनकौ प्रेम मानुस तक ही नहीं अपितु पसु पच्छीन तक व्याप्त हो। बिनें ठाकुर जी की सेवा करिबे वारी गोकुल की गैया प्रिय हतीं तौ ठाकुर जी कू जगाइबे बारौ कौआ हू प्रिय हो। गोकुलनाथ जी के प्राक्टय स्थल अड़ेल गाम के कौआ कौ बरनन आपने यों करयौ है—

धनि धनि अड़ेल गाम को कौआ।
पाछिली रात कुंज मंदिर ढिग बैठि मधुर कलनाथ जगौवा।
सो सुनि श्री जाम पधारत - करि संकेत भगौवा।
निसि दिन रहत सकुन सेवा में मोद भरे निजनाथ रिझौआ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस नीर पीवत जमुना को दूध भात लड्डुवा को खोआ।
श्रवन सुनत वचनामृत सीतल उर अंतर रस - रंग रचौआ।

'रस-रसिक' में श्री गुरुदेव की महिमा के बरनन में आपनें कह्यौ है—

श्री गुसाईं जी कह्यौ तिन सब लह्यौ सकल सास्त्र कौ हेत।
जिन श्री गुसाईं जी जानें नहीं सो तौ बूढ्यौ कुटुम समेत।

श्री गुसाईं जी के स्वरूप कौ परिचय वैष्णव सेवक कू होनौ चाहिए और श्री गुसाईं जी के उपदेस सौं वाहै सिगरे सास्त्रन कौ फल मिल जाय। श्री गुसाईं जी पतितन के उद्धारक हैं। बिनकी सरन उत्तम है। आप लिखें—

प्रथम गुसाईं बल्लभाचार्य जी द्वितीय गुसाईं विठलेश।
बड़े बिचले छोटे गुसाईं जी, तृतीय बल्लभ गोकलेश।
पतित जीव पावन करें अधमाधम उद्धार।
हतित पतित को दीनी सदगति सुकीर्ति जगत विस्तार।

श्री गुसाईं रमणलाल जी महाराज नें अपने दिव्य व्यवहार सौं सिगरे पुष्टि जगत पै अनुपम छाप छोरी ही। आप बल्लभ कुल कमल दिवाकर, प्रकांड पण्डित, साहित्य, संगीत रसज्ञ, कवि - पुंगव और दीन जन स्नेही हे। आपने फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी सं० १९८० विक्रमी में लीला - प्रवेस कियौ हौ। आपकी सुकीर्ति आज तक हू व्याप्त है। वर्तमान में आपके वंश परम्परा में श्री गुसाईं ब्रजरमणलाल जी महाराज आपकी गद्दी पै बिराजमान हैं, जो स्वयं साहित्य और संगीत के रसिक और मर्मज्ञ विद्वान हैं।

□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमीर खुसरो कौ ब्रजभाषा काव्य

अमीर खुसरो ब्रजभाषा के बड़े प्रचीन कवि हे। वीर-गाथा काल में अनेक रासो काव्य रचे जा रहे हे। इनमें डिंगल कौ प्रयोग कियौ गयौ हो। पृथ्वीराज चौहान के निधन के पाछे भारत की राजनैतिक दसा बड़ी तेजी ते बदली। हिन्दू राजान कौ पराभव भयौ। वीरगाथा काल की भाषा हू कौ आधिपत्य घटतौ गयौ। वा काल में पच्छिमी भारत में शोरसेनी ब्रजभाषा और पूर्वी भारत में मैथिली कौ मान बढ़तौ गयौ। अमीर खुसरो पच्छिम भारत के हे। आजकल के एटा जिले के पटियाली में बिनकौ जन्म सं० १३१२ वि० में भयौ। पटियाली हमारे मथुरा नगर ते १०० किलो मीटर पूर्व में हतै। यहाँ गंगा कौ पावन तट है। जे स्थल महाभारत काल को कथान ते हू जुड़ौ भयौ है।

अमीर खुसरो के वालिद तुर्क सरदार हे। चंगेजखान के अत्याचारन ते पीडित भए भारत आए और पटियाली में बस गए। अमीर खुसरो की माँ हिन्दू महिला ही। पटियाली और अपनी हिन्दू माता कौ प्रभाव बालक खुसरो के चित्त पै अमिट प्रभाव छोड़ गयौ। जाही ते वे हिन्दू - मुसलमान सबके है गए। आज हू बिनकी कब्र दिल्ली में बनी भयी है, जापै हर साल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेल। जुरै और सब मिल जुल कै मेला में इकट्ठे होंय। अमीर खुसरो ते हमें साम्प्रदायिक सौहार्द की प्रेरणा आज हू मिल रही है। अमीर खुसरो ने हिन्दू धर्म कौ पंडित - पुरोहितन ते गहरो अध्ययन कियौ। वेद, पुरान, दर्शन के अध्ययन के संग ही संग इस्लाम के अध्ययन ते हू जा ही निश्चै पै पहुँचे कै दोनों धर्मन के सिद्धान्त एक हैं। दोनों ही जा संसार में केवल एक ईश्वर कू व्याप्त मानें। जाही ते वे हिंदू मुसलमान दोनों के पियारे है गए। जाकौ प्रभाव विनकी कविता पै हू स्पष्ट है। ७०० वरिस ते ऊपर बीत जायबे पै हू बिनकी रची कविता आज हू जन जन के हृदय में रची बसी है।

अमीर खुसरो बचपन ते ही कविता करिबे लगे। वे आठ बरस की उम्र में दिल्ली गए। वहाँ बिनकौ संबंध राज दरबार और अमीर उमरावन ते है गयौ। दस बरस की उम्र में वे बहुत अच्छे शैर कहिबे लगे। इननें गुलाम वंस, खिलजी और तुगलक वंसन कौ उतार चढ़ाव देखौ। वे दिल्ली के सात सुल्तानन के यहां रहे। कहैं है कै आपने लगभग ९९ रचना लिखीं। किंतु अब तौ २० - २२ रचना ही मिलैं। आपकी प्रसिद्ध काव्य - रचना हतैं—खालिक बारी, चहार दरवेस, अरबी - फारसी हिंदवी कोश। बिनकी रचना बड़ी मशहूर हैं दोहे, मुकरी, पहेली, दो सखुने, अनमिल, गीत और पद आदि। इनमें जनता की भाषा कौ प्रयोग कियौ गयौ है, जो वा जमाने में बोली जाती ही। अपने एक ही छन्द में अरबी-फारसी और ब्रजभाषा दोनोंन कौ बड़ौ सुन्दर प्रयोग कियौ है। कछू विद्वान बिनकी भाषा कू खड़ी बोली हिन्दी बतामें। पर वो भी ब्रजभाषा के प्रभाव ते अछूती नाएं। बिनकी हिंदी भाषा ए देखिकै आचरज होय। वो तो बिल्कुल आजकल जैसी हिन्दी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा मालुम पड़ै । पर वा काल में ऐसी हिन्दी भाषा को प्रचलन नांय मानौ जा सकै। ऐसौ लगै कै बिनकी रचना जनता में बड़ी प्रचलित हीं। जा काल की जनता नें बिनकी रचना कू लिपिबद्ध कियौ, वानै अपने काल की भाषा में ही लिपि बद्ध कर लियौ। जाते बिनकी भाषा कौ सरूप बदलतौ ही रह्यौ। बिनकी ब्रजभाषा तौ नांय बदली पर हिन्दी बिकास के संग संग बदलती गयी। बिननें कछू रचना तौ ठेठ ब्रजभाषा में करीं और कछू हिन्दी खड़ी बोली में। बाद में समै समै पै कैऊ अमीर खुसरो भए हैं, बिनकी रचना हू इनमें मिल गयीं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल नें अपने ग्रंथ हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिख्यौ है कै अमीर खुसरो की रचनान में दो प्रकार की भाषा मिलैं। ठेठ खड़ी बोलचाल पहेली, मुकरी और सखुनन में मिलैं जद्यपि बिनमें हू ब्रजभाषा की झलक है। पर गीत और दोहन की भाषा ब्रजभाषा ही है।

अमीर खुसरो की मुकरी बहौत मसहूर हैं। जामें वर्णन ते तौ उत्तर कछू मालुम परै किन्तु कवि बाकौ निसेध करकै अर्थात् वा उत्तर ते मुकर के दूसरौ ही वाकौ उत्तर प्रस्तुत करै है। इनकी कछू ब्रजभाषा की मुकरीन की बानगी देखौ--

सिगरी रैन मोहि संग जागा,
भोर भई तब बिछुरन लागा।
वाके बिछुरे फाटत हिया,
क्यों सखि साजन नहि सखि दीया।

जाके बरनन ते प्रतीत होय कै कवि नें प्रीतम कौ बरनन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कियौ है, किन्तु 'दीये' कौ भाव दिखाइकैं पाठक कू चमत्कृत कर दियौ। ऐसें ही—

वो आवै तब शादी होय,
उस बिन दूजा और न कोय।
मीठे लागैं वाके बोल,
ए सखि साजन ! न सखि ढोल।

शादी - व्याह में ढोल वजवे की बड़ी प्रचीन परम्परा ए। वाके बिना शादी कैसी और दूलह के विना कैसी। पर दूलह कौ निषेध कर ढोल को उत्तर पृष्ट कियौ गयौ।

जाही प्रकार ते विनकी पहेली भी बड़ी कौतूहल, उत्सुकता जाग्रत करैं। इनमें जद्यपि खड़ी बोली है किन्तु ब्रजभाषा के शब्दन को भी प्रयोग कियौ गयौ है—

आदि कटै तौ सबको पारै। मध्य कटे ते सबको मारै।
अन्त कटे ते सबको मीठा। सो 'खुसरो' मैं आंखों दीठा।
—काजल

तरवर ते एक तिरिया उतरी, उनने बहुत रिझाया।
बाप का नाप जो उससे पूछा, आधा नाम वताया।
आधा नाम पिता पर प्यारा, बूझ पहेली गोरी।
अमीर खुसरो यौं कहैं, अपने नाम न बोली।
—निबौरी

जामें नीम की निबौरी को संकेत दिरयौ है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नार ने अचरज कीया। साँप मार पिंजड़े में दीया।
जों जों साँप ताल को खाय। सूखे ताल सांप मर जाय।
—दीया - बत्ती

मिला रहै तौ नर रहै। अलग हौइ तौ नारि।
सौने का सा रंग है। कौई चतुरा करै विचार।
—चना

श्वाम वरन और दाँत अनेक। लचकत जैसी नारी।
दोनों हाथ ते खुसरो खींचें। और कहै तू आरी।
—आरी

उज्जल बरन अधीन तन, एक चित्त दो ध्यान।
देखत में तौ साधु है। पर निपट पाप की खान।
—बन्दूक

इन पहेलीन में ब्रजभाषा की प्रधानता देखी जा सकै। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कौ मत है कै बहुत काल ते काव्य की भाषा ब्रजभाषा ही चलती चली आ रही ही।

एक बार अमीर खुसरो काहू गांम ते गुजर रहे। उहाँ बिनै बड़ी प्यास लगी। बे कूआ पै गए। उहां चार छोरी पानी भर रहीं। बिननैं बिनकू पहचान लियौ। कहीं जब हमें कविता सुनाऔगे तभी पानी पियामिगी। खुसरो साहब नें कही काहे पै सुनाऊं। एक ने कही खीर, दूसरी ने कही चरखा, तीसरी ने कुत्ता, चौथी ने ढोल। खुसरो साहब ने चारोंन कू

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलाइकै अनमिल सुनाय दियौ – अनमिल कौ अर्थ जाकौ कोई अर्थ नहीं—

खीर पकाई जतन ते, चरखा दियौ जला।
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा॥

ला पानी मिला।

जाही प्रकार ते बिननें दो सखुने हू लिखे हैं। जामें दो बातन कौ एक ही उत्तर होय—

गोश्त क्यों न खाया, डोम क्यों न गाया।
गला न था।

पंडत क्यौं पियासा, गदहा क्यों उदासा।
लोटा न था।

अब बिनके ब्रजभाषा के कुछ दोहान की बानगी देखौ—

खुसरो रैन सुहाग की जागी पीके संग।
तन मेरौ मन पीऊ कौ, दोऊ भए एक रंग॥

गोरी सोवैं सेज पै, मुख पै डारे केस।
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देस॥

अमीर खुसरो ने ब्रजभाषा में बड़े सुन्दर गीत लिखे हैं। एक गीत में जोवन कौ बरनन कियौ है—

मेरौ जोवना नवेलरा भयौ है गुलाल।
कैसे गर दीनी बकस मोरी माल॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूनी सेज डरावन लागैं,
विरह अगिन मोहि डस डस जाय।

विवाह में बिदा के समै जब कन्या वर के संग विदा होय वा समै कौ ब्रजभाषा में लिख्यो जे गीत आज हू खूब प्रचलित और मसहूर है—

काहे को ब्याही विदेस रे बैरी बाबुल।
भइया को दीने महल दुमहले हमको रे परदेस।
हम तो रे बाबुल तोरे खूँटे की गैया,
जित हांको हँक जाय वा देस।
हम तो रे बाबुल तेरे आँगन की चिरिया,
चुग उड़ जाय अपने देश॥

ब्रजभाषा में ही उनको एक पद है—

हजरत निजामुद्दीन चिश्ती जरजरीं बख्स पीर।
जोइ जोइ ध्यावै तेइ तेइ फल पावै,
मेरे मन की मुराद भर दीजै अमीर॥

अमीर खुसरो नें देशी और बिदेशी भाषान को एक संग प्रयोग बड़ी खूबी ते कियौ। अरबी फारसी हिन्दी कोश में ऐसे छंद हैं, जिनकी पंक्ति कौ पूर्वार्द्ध अरबी-फारसी में और उत्तरार्द्ध ब्रजभाषा में है। देखौ—

जे हाल मिस्की मकुन तगाफुल,
दुराय नैना बनाय बतियां।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किताबे हिज्राँ न दारम, ऐ जाँ,
न लेहु काहे लगाय छतियां ॥
शबाने हिज्राँ दराज चूँ जुल्फ,
व रोजे वसलत चूँ उम्र कोतह ।
सखी पिया को जो मैं न देखूँ,
तो कैसे काटूँ अँधेरी रतियां ॥

अमीर खुसरो बहुज्ञ भी हे। उन्हें हिकमत कौ भी ज्ञान हो। आंखन की तकलीफ दूर करिबे कौ एक नुस्सा सुनौ--

लोध फिटकरी दुर्दा संग। हल्दी जीरा एक एक टंग।
अफीम चना भर मिर्च चार। उरद बराबर थोथा डार।
पोस्त के पानी पोटली करै। तुरत पीर नैनों की हरै।

अमीर खुसरो लोक कवि हे। जोवन के गंभीर धार्मिक राजनीतिक विषयन कू नाय छू कै बिनने लोक के मनोरंजन के ताई अपनी रचना कही, जाही ते लोक में वे आज हू बड़ी प्रचलित हैं। बिनकी कविता सोधो दिल में उतर जाय है। वे बड़े भावुक हे। उनके गीतन में कोमल भावनान की गंगा बहै। जा लोक गीत के बाल हरेक दिल कू पिघलाय रहे हैं —

जो पिया आवन कह गए,
अजहू न आए स्वामी हो।
आवन कह गए आए न बारह मांस।

अमीर खुसरो ने जन साधारण की भाषा ब्रज भाषा कू पकड़ौ, जाते वे जन जन के हृदय - सम्राट है गए।

□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रज के अल्पज्ञात कवि-रत्न—सनेहीराम

ब्रज में लोकगीतन की बड़ी समृद्ध परम्परा रही है। जब भोर की पहली किरन फूटै तभी ते ब्रज के नर और नारी लोक - गीतन के संग अपनी दैनिक जीवन चर्या प्रारंभ करै हैं। आँख खुलिबे के संग ही प्रभाती गाई जांय हैं।

जागिए ब्रजराज कुंवर भोर भयौ अँगना,
चिरिया जागीं, चिरौंटा जागे, जागे प्यारे सुगना।

गाइ गाइ कैं बाल बच्चन कूं जगामैं हैं। मतबल जे है कै दैनिक जीवन के काम गीत गाइ गाइ कै करते जाएं। जासौं ब्रज कौ लोकगीतन कौ कोस अत्यन्त समृद्ध है गयौ है। भजन, कीर्तन, बारहमासो, प्रभाती, उत्सवन के गीत, रसिया, नौटंकी, आदि की पुस्तकें ब्रज क्षेत्र में खूब छपैं और जनता में इनकौ प्रचलन होतौ रहै।

ब्रज के अनेक लोक - कवीन नें खूब ख्याति पाई है। चन्दसखी, पुरुषोत्तम के भजन खूब प्रसिद्ध हैं। जाही प्रकार सौं जनता, सूर, कबीर, मीरा, तुलसी के भजनन कूं हृदय सैं ग्रहण करै है। पातीराम, घासीराम, प्रयागदत्त विचित्र, नरोत्तमदेव दीक्षित, ठा. रघुनाथसिंह अकेला, यादराम गुप्त,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टीकाराम पुजारी के भजन कीर्तन, बारहमासी, उस्ताद रामस्रूप सादावादिया के ख्याल, मनियांभट, कृष्णगोपाल, नथन जड़ियां के स्वांग बहौत ही प्रसिद्ध रहे हैं। सनेहीराम हू ऐसे प्रसिद्ध लोक कवि भए हैं, जिनकी बारहमासी और भजन खूब प्रसिद्ध रहे हैं। परन्तु बिनें आज लोग भूल चुके हैं।

श्री सनेहीराम जी आज ते कोऊ ७५ बरस पहलै या धरा पै बिराजमान हे। सन् १८६२ के आस - पास मथुरा के मुंशी रामनारायण भार्गव ने अपने प्रेस सै इनकी 'सनेही लीला' पुस्तक छापी है। जो खूब चली। श्री सनेहीराम जी नै मांट गांम के कृषक परिवार में जन्म लियौ हौ। आपके पिता जायस ठाकुर श्री मुखाराम जी हे। बिरके पांच बालक हे, जिनमें श्री सनेहीराम जी तीसरे बालक हैं। बिनकूं गाइ चराइबे कौ काम सौंपौ गयौ। गाय चराते चराते सनेहीराम जी कौ हृदय श्री कृष्ण - प्रेम सौं प्रकासित है गयौ। कृष्ण हू तौ गाइ चरामते। वा सरूप नें बिनकू भक्ति - माधुरी कौ दीवानौ बनाय दियौ। सनेहीराम जी गाइ चराइबे जाते हे। जंगल में झांझ बजाते श्री कृष्ण कीर्तन करते रहते। श्री कृष्ण - कीर्तन में बिनें न अपनी सुधि रहती, न गइयन की। जमुना में स्नान करते बिहारी जी कौ दर्सन करते। सिगरी कृष्ण - लीला बिनके हृदय में प्रकासित है गई। गांव में श्री कृष्ण - लीला कौ गान करते, तौ प्रेम और भक्ति टपकी परती। बोही प्रेम भक्ति कौ दिव्य - मधुर रस बिनकी काव्य - रचना में समाय गयौ। पुस्तक कौ नाम रखौ 'सनेही - लीला'। जामें सनेह हर अक्षर से चुचाय रह्यौ है। आपनै बारहमासौ में कृष्ण-लीला कौ बरनन कियौ है। बारहमासी में बारहों महीना कौ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनन होय परन्तु जामें तौ केवल कृष्ण - लीला कौ बरनन है। बारह मासन कौ नहीं। तर्ज बारहमासी की है।

भादों में जब कारी कारी घटा आकास में छायवे लगें, मेघ गरज गरज कें सुन्दर संगीत प्रस्तुत करैं है और बिजली कड़कै हैं बूंदन की धारा गिरै हैं तब अष्टमी कूं कृष्ण जी कौ जन्म दिन आवै है। श्री कृष्ण - जन्माष्टमी के पर्ब पै ब्रजमंडल में भारत के दूर दूर कौने कौने ते जन समूह मथुरा आइकै श्री कृष्ण के जन्म -उत्सव कौ दरसन करै है। जा अपार भीड़ में हमनें मधुर कंठन सौं गूंजती भई आवाज सुनी है—

भादौं आधी रात जनम हरि आठें कू लीयौ।
जगमग जगमग होय महल में जोरि धरयौ दीयौ।
भुजा भगवान कै चारै।
संख, चक्र और गदा पदम ये चारों में धारैं।
कि असगुन कंसा कौ कीयौ।
भादों आधी रात जनम हरि आठें कू लीयौ।

जा बारहमासी तर्ज में श्री सनेहीराम जी ने श्री कृष्ण की सिगरी बाल - लीलान कौ बरनन कियौ है। श्री नन्दलाल के बाल - चरित्र कौ बरनन प्रारंभ करिबे ते पूर्व बिननें माँ सरस्वती गुरु जी, गणेश जी और अपने माता - पिता कौ सुमिरन कियौ है—

कण्ठ सरसुती सुमिर चित्त गुरु चरणन में दीयौ।
सीस मैं सारद कू नांऊँ।
कृपा करौ तेतीस देव गुण मोहन के गाऊँ।
ज्ञान गुरुदेव ने दीयौ।
नंदलाल के बाल - चरित्र कौ प्रारंभ है कीयौ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्म, माया और जगत के विषय में बिनके बड़े स्पष्ट विचार हैं। बिननें श्री कृष्ण कूं निराकार ब्रह्म ही मान्यौ है—

अलख लख्यौ नहिं जाय निगम याहि नेति नेति गावें।
सून्य समाधि लगाय ध्यान में जोगीजन लावें।
पार याकौ किनहूँ ना पायौ।
शेष सहस्र मुख रटैं नाम कौ अंत नहीं आयौ।
ध्यान सिव ब्रह्मा ने कीयौ।
नन्दलाल के बाल-चरित्र कौ प्रारंभ है कीयौ।

सनेहीराम जी नें ब्रह्म कू अनादि अनन्त मान्यौ है और बाकी सत्ता सबमें व्याप्त मानी है। जीव वाके अंस के विद्यमान होइवे ते ही चैतन्य है—

नहीं आदि नहीं अंत पिता नहीं कोई याकी माता।
सदा एक रस रहै भक्त और संतन ते नाता।
व्यापि रहौ घट घट में प्यारौ।
मिलौ रहै न मिलौ रहै वह सबही ते न्यारौ।
जीव चैतन्य सबन कीयौ।
नन्दलाल के बाल-चरित्र कौ प्रारंभ है कीयौ।

पांच तत्व - क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर, और तीन गुण सत, रज, तम माया के ही गुण हैं। इन्हीं सौं जा सिगरी सृष्टि की रचना भई है—

पांच तत्व गुण तीन प्रकट जो माया ते कीये।
तीन लोक ब्रह्मांड खंड याही नें रच दीये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मा भगवान की नाभि सैं उत्पन्न कमल सैं प्रकट भए हैं। बिननें कैंसै सृष्टि की रचना करी सो सुनौ—

भयौ नाभि ते कमल प्रगट यह ब्रह्मा तप कीयौ।
महा प्रलय जल पवन देखि कै कांप उठौ हीयौ।
ब्रह्मा तब मनमें घबरानौ।
तप तप भई आवाज ब्रह्म तव ब्रह्मा ने जानौ।
बैठि तप कमल पै कीयौ।
नन्द लाल के बाल चरित्र को प्रारंभ है कीयौ।
सहस्र वर्ष तप कीयौ तेज जब ब्रह्मा में आयौ।
धरिकै देख्यौ ध्यान ब्रह्म याहि हिरदै में पायौ।
कृपा जब ब्रह्मा पै कीनी।
ब्रह्मा भये प्रसन्न कि रचना लोकन की कीनी।
बड़ौ वर ब्रह्मा कूं दीयौ।
नन्दलाल के बाल - चरित्र कौ प्रारंभ है कीयौ।

ब्रह्मा की रची भई जा सृष्टि में ब्रज - मंडल कौ महत्व श्री सनेहीराम जी नें जा प्रकार ते बरनन करयौ है—

तीन लोक में बड़ौ सबन ते पृथ्वी ठहराई।
जामें जम्बू दीप की महिमा वेदन में गाई।
खण्ड तब करि दीये न्यारे।
भरत खण्ड है बड़ौ कि यामें बहुत नदी नारे।
राज याकौ भरत नें कीयौ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नन्दलाल के बाल - चरित्र कौ प्रारंभ है कीयौ।
भरतखण्ड में अधिक सघन ब्रजमंडल ठहरायौ।
धरिकै श्याम सरूप ब्रह्म जामें खेलन कू आयौ।
धन्य है मथुरा रजधानी।
धन्य धन्य वसुदेव धन्य हैं देवकी रानी।
बड़ौ कोई सुकृत है कीयौ।
नन्दलाल के बाल - चरित्र कौ प्रारंभ है कीयौ।

जाके उपरांत श्री सनेहीराम जी नें श्री कृष्ण के जन्म कौ बरनन करिकै पूतना, सकटासुर, तृणावर्त आदि कौ वध, माखनचोरी, यमलार्जुन, बकासुर वध, ब्रह्मा वत्स हरन, कालो नाग मर्दन, गोवर्धन - धारन, धेनुक वध, दावानल पान, चीर हरन, व्यौमासुर - वध, वंसौ - वादन, गोपी - विरह, महारास, शंख चूड़, वरुन - गर्व हरन, अक्रूर कौ ब्रज आगमन, कृष्ण कौ मथुरा गमन, धोबी आदि कौ बध, कुवलयापीड़ कौ मद खंडन, सल, तोसल, चाणूर, मुष्टिक मल्लन कू पछारि कंस - वध की लीला कौ बरनन कीयौ है और मथुरा कौ राज अपने नाना उग्रसेन कू देवे के वरनन के संग सनेहीलीला पुस्तक संपूर्ण है गई है।

सनेहीराम जी नें भजनन की रचना हू करी है। परन्तु अभी तक जे भजन पुस्तक रूप में प्रकासित ना भये हैं। एक भजन है—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जसोदा तेरे लाल ने माटी खाई।
नाहीं करी हमनु बहुतेरी बाके मन नांय भाई।
जाइकै अकेलौ खेलै छोड़ि ग्वालन कौ साथ।
काऊ देइ गारी अरु काऊ कू चलावै लात।
हमने कही कै तेरी मैया ते कहिंगे जाइ।
जबई करैं लराई।

श्री सनेहीराम जी नें अपनौ परिचय पुस्तक में जा प्रकार सौ दियौ है—

मांट गाम निज धाम वाम जब कीनों ब्रजरानी।
नन्दलाल की बाल कथा जो लोकन में जानी।
सुनैं और सीखें जो गामें,
कहैं सनेहीराम परमपद हरिही कौ पावैं।
मान यानें कृष्ण कौ कीयौ।
भादों आधीरात जनम हरि आठें कू लीयौ।

श्री सनेहीराम जी कौ जे लोक - काव्य ब्रज की जनता कौ कण्ठहार हौ। वे बड़े सरस कवि हैं। भक्तिरस सरावोर बिनकौ काव्य नीरस हृदय हू में भक्ति - रस कौ संचार करि देय है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रज-काव्य के अमूल्य रत्न

कविवर श्री रामलला

आज ते कोऊ पैंतीस बरस पहलै मैंने कविवर श्री रामलला जी के दरसन अपने कालेज में करे हे। विनैं काव्य - गोष्टी की अध्यक्षता करबे कू निमंत्रित कियौ गयौ हौ। साहित्य-परिषद की मंत्री की हैसियत ते मैंने बिनकौ स्वागत कियौ हौ। प्रथम भेंट में ही मोहि कविवर रामलला जी बड़े ही सीधे सादे निश्छल भोले ब्रजवासी लगे हें। प्रेम और आसीर्वाद की झोरी बिननें पूरी की पूरी ही हमपै उड़ेल दई ही। बिनकी मधुर मधुर मुस्कान के संग नेत्रन ते निस्छल प्रेम कौ भाव चुचाय रह्यौ हौ। विन जैसे कवि - रत्न कौ अभिवादन करिकै हमारे कालेज के हिन्दी साहित्य के प्रवक्ता, अध्यापक और प्रधानाचार्य सभी कृत - कृत्य है रहे हें। तब ते लला जी ते परिचय बढ़तौ ही गयौ।

लला जी प्रायः मथुरा की पढ़न्त गोष्ठीन के प्रमुख कवि रहते हें। विनके मुख ते अमृतधुनि छन्द कौ रस ऐसै निःसृत होतौ जैसे कि सावन में मेघ - माला के गर्जन कौ शब्द। जहां भी वे कवित्त पढ़ते वहां अमृत धुनि छंद के पाठ की फरमाइश अवसि होती। उनकौ काव्य कन्द कौ मधुर डेला हौ जहां ते तोरौ वहां ते ही सरस और मधुर निकसतौ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविवर श्री रामलला जी कौ जन्म मार्गशीर्ष शुक्ला प्रतिपदा संवत् १९६३ वि० में मथुरा की गली दसावतार में श्री हनुमान जी सरदार के घर में भयौ। आप भारद्वाज गोत्रीय भटेले अल्ल के सनाढय ब्राह्मण हैं। आपकौ वास्तविक नाम तौ रामलाल हौ किन्तु बाल्यकाल में आपकी सरस मधुर बाल लीलान के कारन परिवारीजन बिनैं लला कहिकैं पुकारते। तातैं बिनकौ नाम रामलला ही परि गयौ।

आप मल्ल विद्या में हू वड़े निपुण हैं। अपने नगर के नामी नामी मल्लन कूं आपने पछारौ हौ। आपने श्री मद्-भागवत कौ गहन अध्ययन कियौ और भागवत के श्रेष्ठ प्रवक्ता कहें जाइवे लगे। ब्रज के प्रसिद्ध कवि श्री भोला - भण्डारी जी आपके काव्य - गुरु हैं। श्री भोला भण्डारी जी के यहां नारायनदासजी संगरिया, प्रेमीजी, लाल बलवीरजी, नवनीतजी चतुर्वेदी, सैंया जी, बल्लभ जी, श्री राम जी चतुर्वेदी, चौबे मानिकलाल जी, देवी द्विज जीं, मुरली जी, किशनलाल जी पापड़ वाले, कल्लो माली, नारायनदास मुनीम, ला. श्रीनाथदास ऐवं श्यामसुन्दर जी करांची वारे, ला. ग्यासीरास जी हलवाई, बाबूलाल सर्राफ, बहोरीलाल जी पुजारी, लल्लोमल न्यारिया, नारायनदास दारवारे, आदि कवि - जन कौ समागम होतौ। काव्य - पढ़न्त की जा अजस्र धारा में लला जी कौ हू विशेष योगदान रहतौ।

श्री लला जी साहित्यिक प्रवृत्ति के विकास में उनके परिवार की कला - प्रियता कौ विशेष योगदान हौ। आपके पिता, ज्येष्ठ और कनिष्ठ भ्राता नृसिंह चतुर्दशी के अवसर पै आयोजित नृसिंह लीला में नृसिंह बनकैं अत्यन्त भावपूर्ण नृत्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत करते हैं। आज हू विनके पुत्र या परम्पराको पालन कर रहे हैं।

श्री रामलला जी ने संस्कृत साहित्य और व्याकरण हू को गहन अध्ययन कियौ हौ। आपकी प्रथम रचना 'द्रौपदी-दुकूल' कौ प्रकाशन अ० भा० ब्रज साहित्य मण्डल ते भयौ हौ। द्रौपदी दुकूल की या रचना में विनको काव्य-माधुरी दृष्टिगत होय है। द्रौपदी कहै—

मेरी लाज जाय तौ भलै ही जाय जदुराज,
कौरव समाज हेरी तेरी आज जायगी।
'लला कवि' मेरी लाज पाण्डव-पियारी नाहिं,
कछू तौ बताउ तेरी काके काज जायगी॥
मेरी लाज सत्त की असत्त के हवाले परी,
सत्य सिंधु तेरी सत्यता निवाज जायगी।
मेरी लाज तेरी लाज, तेरी लाज मेरी लाज,
मेरी लाज जायगी तौ तेरी लाज जायगी॥

यदुराज भगवान श्री कृष्ण नें द्रौपदी की पुकार सुनी और चीर कू बढ़ाय दियौ--जा घटना ते हर्षित भयौ कवि भक्ति-रस में डूबकें लिखै—

नंद के कन्हैया नें कि जसुमति के छैया नें,
कि ब्रज जन रैया नें, कि गाइन चरैया नें,
'लला कवि' दैया नें, कि बल जू के भैया नें,
कि सागर मथैया नें, कि गागर ढुरैया नें,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुष्टन दलैया नें, कि मुष्टिक वंधैया नें,
कि पाण्डव सहैया नें, कि गिरि के धरैया नें,
दुःसासन ढैया नें, कि भव - रुज - नैया नें,
चीर कौ बढ़ाय दियौ चीर के चुरैया नें।

संदेह और अनुप्रास अलंकार की छटा ते सोभित जे छंद लला जी की काव्य - माधुरी की सहजता, सरसता और भावुकता कौ प्रतीक है।

जाके पश्चात् 'वीर-विक्रम वैभव' में सम्राट विक्रमादित्य की वीरता और वैभव कौ यशोगान है। वीर रस युक्त जा छंद कू देखौ—

वस करि लीने छितिपाल छिति मण्डल में,
थिति प्रभुता अखण्ड जस सुखदाता कौ।
'लला कवि' बैरिन कौ बल बिचलैया कह्यौ,
पंडित कविन्द वृन्द विरद सिहाता कौ॥
वीर जननी की नीकी अमर कहानी कर,
समर समर समरांगन के धाता कौ।
सब जग जानैं औ प्रमानैं सब भांति भांति,
विक्रमाधिराज ही कै विक्रम विधाता कौ॥

'मोदक - महिमा' हास्य रस की रचना है। जामें ललाजी के संयत और शिष्ट हास्य की छटा कू देखौ—

मोदकन मधुर छिपाय खायो गनपति रे,
जो पै कहुँ सूंड़ि सो सटक एकु जावैगौ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'लला कवि' देखिकै षडानन मचावै रार,
दौरि दौरि मूसौ ऊंसौ मचलि मचावैगो ।।
बरध विचारौ चारौ छांड़िहै सुगंध सूंघ,
बब्बर बिसारि कानि कानन सिधावैगो ।
भांग वारौ बाबा एक बूंदी देखि पावैगो तौ,
रोटी हू न खावैगो और लार टपकावैगो ।।

लला जी ने वीर, हास्य के अतिरिक्त करुण, शान्त, श्रृंगार आदि अनेक रसन में रचना करी है। द्वारकाधीश नख - शिख, वृन्दावन - विरुद, गंगा - गरिमा, यमुनाष्टक, गोवर्धन - पूजा, सूर - मीरा पच्चीसी, आदि कृतियां शान्त और भक्ति रस से मंडित हैं। इनमें श्रृंगार की भी दिव्य छटा मिलै है।

लला जी ने घनाक्षरी, मनहरण, छप्पय, दोहा, सोरठा, कुंडलिया, सवैया आदि छन्दन में काव्य - रचना करी है। अत्यन्त कठिन छन्द अमृत ध्वनि में रचना करिबे में तो वे बड़े ही निपुण हे। उनके काव्य में लालित्य, माधुर्य और प्रसाद की त्रिवेणी बहै है। अन्योक्ति, वक्रोक्ति, रूपक, उपमा, श्लेष मालोपमा, प्रतीप, अपह्नुति, अनुप्रास, अतिशयोक्ति आदि अलंकारन ते उनको काव्य अलंकृत है। 'जोग-कहानी' को जे छन्द उनकी काव्य - शोभा कू प्रकट करै है—

मथुरा सों मुकुंद पठाए हमें,
हम लाए संदेसौ सयानी सुनौ।
तुम प्रेम की मूरति मानी 'लला'
कवि गानी महा ब्रजरानी सुनौ ।।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नित नव्य निकुंज बिहारिनी है,
पुनि पांयन ढाक बखानी सुनौ।
जसुदा नन्दजू के लड़ायबे की है,
वियोगिनी राम कहानी सुनौ॥

आपके छन्द अनेक पत्र - पत्रिकान में हू छपते हे। आप आकाशवाणी दिल्ली के ब्रज माधुरी और मथुरा केन्द्र ते अपनी काव्य - सुधा कौ पान कराते रहते हे। आपके काव्य - वैभव के उपलक्ष में आपकू ब्रज - भाषा रत्न, ब्रज कला - कोविद, अमृत धुनि सम्राट आदि अनेक उपाधिन ते अलंकृत कियौ गयौ ही। ब्रज साहित्य मण्डल और हिंदी साहित्य परिषद आदि अनेक साहित्यिक संस्थान नें आपकौ अभिनन्दन करिकै अपने कू कृत्य कृत्य मानौ हौ। ऐसे परम प्रवीन कवि - सुधी विद्वान कौ गोलोक वास मार्गशीर्ष शुक्ला नवमी सं० २०३२ वि० में भयौ। आज तौ उनकी स्मृति मात्र ही शेष है। ☐

लला जी की प्रशस्ति में एक छंद

लव हौ कै कुस हौ कै अथक धनुर्धर,
काव्य-सर संधाने जग धुजा फैराने हौ।
राम के लला नें जैसै राम फौज रोक राखी,
राम के प्रताप जैसौ जस बिस्तारे हौ॥
बरने विविध छंद रस, अलंकार, रीति,
गाजे नगाड़े अमृत धुनि के प्रचारे हौ।
लला कवि प्यारे हौ ब्रज - वसुधा के भूप,
काव्य-कोश रतनन के अमित उजारे हौ॥

रचयिता—राधेश्याम अग्रवाल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेखा-चित्र—

तेरौ दरस मोहि भावै

तेरौ दरस मौहि भावै जमुने महारानी
तेरौ दरस मौहि भावै जमुने महारानी
तेरौ दरस मौहि भावै जमुने महारानी.......

गामती ही चली जा रह्यौ है। बड़ौही मधुर सुर है। कंठ की मिठास में मानौ मिसरी घुरी भई है। बार बार जे धुनि कानन में परै और मन उतकू ही खिचौ चल्यौ जाय। नैनन ते देखूं तो कौई दिखाई नांय परै। फिर बोई सुर.......... मेरे पैर धुनि कौ अनुगमन करते करते पहुँच ही गए वाके पास।

बढ़ी चली जा रहौ जंगल की पगडंडी पै ध्यान मग्न गामतौ..............होस हू नाए वाए कौन वाके आगे कौन वाके पीछै। घने घने वृक्ष, पीपर के, बड़ के, नीम के, तौ कहूँ तमाल और कदम्ब के। अभी भुकभुकौ सौ है। सूरज निकसिवे वारौ है। ओस ते घास हू गीली है रहो है और रज हू सीरी है रही है। नंगे पैर चलते भए मोहै एक बाबा जी की आकृति दिखाई परी। कंधा पै झोरी और हाथ में टेढ़ौ मेड़ी लकड़ी। एक हाथ में करुआ और सरीर पै गूदड़ ते बनी फितूरी। कैसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमक रही ही चन्दा की चाँदनी में बाकी गूदरी ......साल हू दुसाला कहा वाके आगे। लाल बलवीर ने हू ठीक कही—

गुदरी गुथेमा मान मारें दुसाला के।

पूनौं कौ प्रातकाल कौ चंदा बाकी गूदरी पै तौ चाँदनी बरसा ही रह्यौ पर बाकौ करुआ और बाकी लकुटिया हू चाँदी की है रही और रज लिपौ वाकौ मुख चाँदनी की चमक ते चमक रह्यौ। तौ बाबा जमुना स्नान कू जा रहे हैं। मैंने जान लियौ। चकवा चकवी मस्त है कै कूज रहे हैं। बिनकी धुनि ने जा प्रदेस कू गुंजरित कर राखौ है। बाकी सब सुनसान............एक दम सान्ति—एक दम नीरवता.......बाबा की धुनि और मेरी गति बस दो ही तौ जा प्रदेस कू सब्दित कर रहे हे।

पहुँचकें मैंने बाबा कू प्रनाम कियौ जै श्री हरिदास और फौरन ही बाबा ने कही जै श्री हरिदास। बाबा आप हू जमुना पै जा रहे हौ............अच्छौ संग बनौ। आपते कछू सत्संग लाभ होयगौ। आपके करुए के जल कौ चरनामृत तौ मिलैगौ ही। बाबा बोल्यौ अरे बावरे ! देख जा करुए के जल कौ ही तौ जे सिगरौ प्रकास फैल रह्यौ है। स्वामी जी कौ जल जामें रहै। सिगरी आधि सिगरी व्याध दूर...... सिगरी सम्पति........सिगरी बिपत्ति जाही में कैद पड़ी हैं। तू जामें चाहै जैसी भावना करलै स्वामी जी के प्रताप ते बोही सिद्ध होइगी। अरे तोय मालुम नाहै अकबर बादसाह वृन्दावन में आयौ। छिपकै। पीछे पड़ गयौ कछू सेवा लेओ कछू सेवा लेओ—तौ बिनने कहा कही—मेरी जमुना जी के घाट के एक पत्थर कौ कौनो टूट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयौ है, बनवाय दै जाए..........अकबर बादशाह ने देखौ कहा मांगौ है बाबा जी ने..........जे हू कछू मांगिबौ भयौ और पत्थरन की मेरे कहा कमी..........घाट कहा किले बनवाय दऊं..........गयौ तौ कहा देखै कै जैसे रतन घाट में जड़ रहे हैं--वामें ते एक हू वाके पास नाए—वो तौ निरौ गरीब है। झटपट खुल गई वाकी आंख ऊपर की और भीतर की - चरनन पै गिर पड़ौ। तौ जा करुए के जल में तो कहा नाहे। भावना कर..........सब भली होयगी।

हां बाबा ! जे तौ मैं जानू हूँ। बिना विस्वास के तौ कछू कछू नांहै। जाही विस्वास पै तौ जीवन ही टिकौ है। अब भगवान कृष्न तौ ब्रज में नाहैं जो हम ग्वाल बाल बिनतें अपनी रोय लै अब तौ ब्रज में जा तौ बिनकी पटरानी श्री जमुना जी हैं या आप जैसे बिनके भक्त जन हौ, जो बिनकौ ही रूप हैं। जमुना जी तौ बिनके संग संग खेली, संग संग कूदीं और स्यामा - श्याम के सिगरे विहारन कू प्रत्यक्ष देखती रहीं।

अरे हां कोई झूठ थोरे ही है। अरे अक्रूर जी नें जमुना स्नान करे तौ स्याम सुन्दर की प्रत्यक्ष छवि जमुना के भीतर देखी। निरमल है गए—मान गए स्यामसुन्दर की महिमा कू। जे ही भगवान हैं। मैया जमुना जी की तौ वेद - पुरान में बड़ौ बड़ौ उल्लेख मिलै। ऋग्वेद में इमं मे गंगे यमुने मंत्र दियौ है। पुरान तौ जमुनाजी की महिमा गाते गाते थके नाय। श्री भागवत जी नै तौ कही है कै जमुना जी श्री कृष्ण की चौथी पटरानी हैं। आचारज बल्लभ जी नें तौ श्री कृष्ण और यमुना जी कू एक सरूप ही मानौ है। जे तौ भक्तन की भाग्य विधाता हैं। भगवान ते मिलाइबे वारी देवी हैं। जब स्याम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर ब्रज़ में हर छिन हर पल विराजमान रहैं तौ बिनकी प्रियतमा जमुना जी ब्रज ते अलग कैसै रह सकैं। हमारे स्याम-सुन्दर तौ हर दिन जमुना जी के सग रहें। मोहि तो जमुना जी में स्याम सुन्दर कौ रूप ही प्रतिपल आभासित होय। जे तौ कृष्ण समा हैं, कृष्ण रूपा हैं, कृष्ण रसात्मिका हैं। जाते जाते हमारे जीवन की हू मूर है। जहाँ बंसीवट है मधुर मधुर बंसी बजायबे कौ स्थान.........फिर जाई तट पै ही तौ रास कियो हो स्याम सुन्दर नें और आज हू तोय उनकौ विहार नांहि दिखाई परि रह्यौ। सुन, देख, सुन, बंसी बज रही है—नृत्य है रह्यौ है—वादन है रह्यौ है—गायन है रह्यौ है। ध्यान से सुन.................

और मेरे कानन में दिव्य संगीत की लहरी गूंजबे लगीं।

□

श्री जमुने तिहारौ पुलिन मोहि भावै।
सुर ब्रह्मादिक ध्यान धरत हैं सो सपने नहि पावै।।
बिच-बिच कुंज सदन अति सुन्दर स्यामा स्याम सुहावै।
चहुँ दिसि सकल फूल अति फूले गुहि-गुहि कण्ठ धरावै।।
कुसुमन के बिजना जो संवारे सखियन बाँह दुरावै।
'सूरदास' प्रभु तव सुख-सागर दिन-दिन सोभा पावै।।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास्य-व्यंग—

नाच न आवै आँगन टेढ़ौ

तिहारौ ऐसे मानुसन ते पालौ अवस्य परौ होयगौ जो चाहे अपनौ ही खोट होय पर वाहै दूसरे पै थोप दैगे।

अब वाही दिना की बात है। हमारे पड़ौसी स्यामलाल कूद कूद पर रहे। हम देखिवे गए कै कहा बात है। तौ बहस छिड़ी भई ही। बात जे भई कै मौहल्ला के नल पै पानीं भरिवे कू लुगाइन की भीर लगी भई और नल बूंद बूंद करिकै टपक रह्यौ। पहलै मैं भरूंगी, दूसरी कहती पहलै मैं भरूंगी और जाहीं में छिड़ गयौ हौ वाक् - जुद्ध। अभी तौ जुवान ते ही जुद्ध है रह्यौ फिर खेंचा खेंची कौ हू नम्बर आइ गयौ। फिर कहा है उहाँ तौ पूरी दलबंदी है गयी। कलसा खनकबे लगे और बाल्टी लुढ़कबे लगीं। घड़ान की तो सामत ही आय गई। दो चार घड़ान की तौ वहीं करम कल्ला है गयौ और जाकू देखिकै स्यामलाल जी कोसैं जाय रहे। देखौ अभी वोट लेबे के काजैं तौ कैसे कैसे सपने दिखाय रहे। परचा हू छपवाय छपवाय कै बंटवाय दिये-खूब पानी मिलैगो-सिगरे दुःख दूर है जाइंगे। भयौ कछू नहीं। नल और महादेव बाबा की जलहरौ की तनया बूंद बूंद करिकै टपकबे लगौ। अब स्याम-लाल जी कू कहा मालुम कै आजकल कैसी बीत रही हैं। ऐसी भयंकर गर्मी में जमीन कौ जल - स्तर हू जबाव दै गयौ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और बिजली के वोल्टेज गायब हैइबे ते नल-कूपन कू चलाइवे में कैसी कैसी दिक्कत आय रही हैं। काहू में पानी नाहै। काहू की मसीन खराब है गयी है। और टिल्लू पम्प तौ धकाधक लाइन ते पानी खेंचे चले जाय रहे हैं। पानी फिजूल में खूब खरच कियौ जाय रह्यौ है। नल खुले हैं तो खुले ही पड़े भए हैं। कछू करिबे धरिवे के तौ है नांय। जल की बर्बादी कू रोकिवे के उपाय होंय। पाँच सात मिलिकैं कछू ऐसौ प्लान बनामें कै जल की व्यवस्था है जाय। इतने में ही बड़ी जोर की आवाज भई। काहू कौ घड़ा सुरलोक पहुँच गयौ वो बहिना दूसरी के प्रान चाटैं जा रही ही। वानैं कही कै घड़ा तौ तैंने टेढ़ौ रखौ। गुस्सा मोपै उतार रही है। नाच न आवै आंगन टेढ़ौ।

अब जे रौमनौ तौ चल ही रह्यौ कै हमारे मौहल्ला के नेता दुःख भंजन राम और टपक पड़े। फलगू, अलगू, सुखराम, दयाराम बिनते बहस करैं जाय रहे। क्यों जी पंचायत में औरतन कौ कहा काम। अभी तौ पंच ही आपस में गुत्थम गुत्था होते अब कहा औरत हू चिमटा बेलन चलामिंगी। अजी समझ में न आई। जे गाम पंचायत बनाई हैं गामन के सुधार कू। गामन कौ विकास गाम बारे अपने हाथन ते करिंगे। अफर साही बंद होयगी। जे तौ ठीक है। पर महिला कहा करेंगी। अब बिनें कौन समझावै कै भइया अब महिला तुम्हारी पैर की जूती नांहैं, जाहै जब चाहौ चढ़ाय लो और जब चाहौ उतार लेओ। समाज में बिनकौ भी बराबर की हिस्सेदारी है। फिर पंचायत में बिन्हें जगह क्यों नहीं मिलनी चाहिएं और फिर जे तौ सरकार कौ बड़ौ अच्छौ ख्याल है। महिला आगै बढ़िगी, बिनकौ जागरण होयगौ। बे हू समाज

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को हिस्सेदारी में भाग लिंगी तो समाज को उत्थान होयगो। पर उनकी समझ में खाक आवै। कछु जानें तभी तो। वे तो पिछले ही युग में जी रहे हैं। अब नयो जुग कैसो जल्दी जल्दी आय रह्यौ है, विन्हें कहा मालुम। बिनके गाम में हू कई बार पंचायत बनी और टूट गई। काम धेला भर नांय भयो। सिगरे पंच जाको दोस लगाते गाम के लोगन पै पर भइया सांची बात तो जेही है कै नाच न आवै आंगन टेढ़ो।

हम जैसे तैसे इनते पिंड छुड़ाइकै घर पहुँचे तो वहां पड़ोस में महफिल अलग जम रही। ढोलक बज रहीं और मजीरा खरताल की तालन पै लोग राग झूम रहे हे। हरमुनिया और तबला पीट पीट कै बजाए जा रहे हे। गनेसीलाल जी नें पहले तो लम्बी खकार लैकैं गरो साफ कीनो। फिर आलाप लेइबे लगे। फिर मंजीरा वारे ते बोले भइया ढंग ते बजा नेंक ताल वाल तो मिला। वो बोलो गुरु पचास साल ते बजाय रह्यो हूं। अब कहा बुढ़ापे में मोहि बजाना सिखवाओगे। गनेसीलाल जी बोले तो फिर सुर क्यों न मिल रहे। अब सुर तो जब मिलैं जब उनको गरो सुर मिलावै। वू तो फटफटिया की तनया फट फट करतो ही जाय रह्यौ है। फिर बिनकी समझ में कहां आवै। अब कै वे ढोलक वारे ते इरझ पड़े। ढोलक वारो बोलो मेरी ढोलक में कहा कमी है। नेंकु अपनी तरफ तो देखो। सौई गुस्सा में भरिकै गनेसीलाल जी बोले— रहन दै रहन दै बजाय लई तैंने ढोलक। रख दै रख दै। आ भइया पहलवान तू संभार अपने तबला कू। पहलवान बोल्यो कौनसो ताल निकासूं। झपताल कै त्रपताल। गनेसीलाल जी बोले - अरे कोऊ सो ताल निकास पर सुर तो मिला। तबला बारो सुरताल मिलाइबे लगो। पर गनेसोलाल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सुर ते मिलिबे में ही नांय आवै। आय गयौ बिनकूं गुस्सा और बिननें फेंक दिए तबला - बबला। पहलवान बोले— गुरु जे कहा कर रहे हौ। मैं तौ सात पुस्त ते तबला ही बजातौ आय रह्यौ हूं। अभी तुमनें गायौ हू है और वे गुत्थम गुत्था है गए। देखिबे वारे कहिबे लगे देखौ—नाच न आवै आंगन टेढ़ौ। खुद गाय नाइ सकें और क्षूंझर उतार रहे हैं साजिंदन पै।

इतकूं तौ जे झंझट होतौ रह्यौ, हम तौ झट ते बगल में अपने घर में घुस गए। घर में घुसे तौ कहा देखैं कै हमारी ऊपर वारी रामप्यारी भन्नाटौ खाय रही है। जा मरी गैस में लाइकै आग लगाय दई है। आंच हो ढंग ते नाय बरै। अब कैसे सेकूं कैसे फुलाऊं। जामैं सै तौ लौ ही लौ निकसी जांय। रामप्यारी जो रोटी सेकै सोई जर जाय। वाकौ पती खानौ खाइबे बैठौ भयौ हौ। जो रोटी बाके सामने आवै सोई जरी भई। दाल में निमक ज्यादा तौ चटनी में मिर्चन की भरमार। वाकौ पति बोलौ—भागवान जे कहा कर रखौ है। दार में निरौ पानी कर राखौ है और घर में निमक बाकी छोड़ौ है कै नांय कै सिगरौ ही दार में डार दियौ है। तो ते मिरचन कौ अचार डारिबे की कही कै सिगरी मिर्च तैंने चटनी में ही झोंक दई हैं और जे रोटीन कौ कहा हाल है। सिगरी जराय दई हैं। अरी खानौ तौ ढंग ते खवाय देऔ कर। रामप्यारी भर्राय कै बोली जे मरौ गैस कौ चूल्हौ ही ऐसौ है। मैं कहा करूं। सब रोटीन नें पजार देय। लौ ही लौ बरती रहैं भभका तो देय नांय है। रोटी कैसैं सिकें। वाके पति नै माथौ ठोक लियौ। धन्य हैं भागवान दुनिया गैस पै रोटी सेक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही है और तोहि आफत मालुम पर रही है। नाच न आवै आंगन टेढ़ौ।

गुलकन्दी की वात तौ और हू मजेदार। वाकी सुनौ। बच्चन कू तौ भिनभिनौ रखेंगी। कहूँ लुढ़क रहे हैं—कहूँ पुड़क रहे हैं। सार - संभार करै नांहि और दोस बच्चन कू देए। मरे कैसे भिनभिनाते डोलते रहमैं। ढेरन आइकै जम गए हैं। बिचारे बच्चन कू खूब गारी खामनो परैं और तौ और बच्चन के संग बच्चन के बाप की हू आफत आय जाय। अब जामें बच्चन कौ कहा दोस और बिनके बाप कौ कहा दोस। बाप अपने काम - काज में घिरौ रहै और मइया में सहूर ही नांय कै घर गिरस्थी संभार लेय।

जा दुनिया में ऐसे ऐसे अनेक लोग - बाग दिखाई परैं हैं जो अपनी कमीन कू छिपाइवे के काजें दूसरेन पै दोस लगामते रहैं। अब बिनते कहा कही जाय। बिनते तौ हाथ जोड़नौ ही अच्छौ। काहू नें ठीक ही ही कही है नाच न आवै आंगन टेढ़ौ।

□

Central Library
185499
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी—

पुरिसारथ

"रम्मो की मैया, अरी ओ रम्मो की मैया !"

'हाँ अम्माजी ।'

'अरी चूल्हौ - चूल्हौ बगायौ है कै नांय । दो रोटीं मैं हू वापै सेंक लउंगी । अब अकेले पेट के काजै कौन खटराग करै ।

'अम्माजी ! वो तौ बजार गए हैं । कछू नोन तेल लकड़ी की जुगाड़ में । घर में तौ खोटौ हू सिक्का नांय । फिर चूल्हौ कैसे बरे ।'

अस्सी वरिस की विधवा डोकरी बरफो रुकमिनि के संगई एकई बाखर में रहती । दोनों ऐसी रहतीं मानों सास-बहू होंय । रुकमिनि कौ पती किसन एक लाला के इहां कारखाने में काम करै है । हट्टौ कट्टौ, गोरौ चिट्टौ, सुन्दर ज्वान एँ । इण्टर पासऊ है । पर जा जुग में नौकरी मिलनौं तौ ऐसौ समझौ जैसै कै आसमान ते तारे तोड़ लाए । सो बिचारौ कई वरिस तक दर दर भटकतौ रह्यौ । नेंक अखबार में कोई जगै खाली देखी औ फौरन अरज़ी भेज देतौ । अरज़ी पै अरज़ी भेजतौ गयौ । पर वाकूं कहीं ते कोऊ जवाब नांय मिल्यौ । बड़े बड़े एम. ए. पास पहले ते ही लाइन में लगे रहते । तौ इण्टर पास किसन कू कौन पूछतौ । और कहूँ पूछ होमती भी तौ भइया पहलै बताय दै नौकरी मिलिबे के ताईं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितनी खरच कर सके। और खर्च कैसें करती। गाम में थोड़ी सी जमीन तौ हती पर वाते सिगरे घर कौ पूरो कैसै पड़तौ।

किसन के बाप - मैया विरद्ध है चले हे। बाप कू आँखिन ते ऊ कम दिखाई परतौ। सत्तर कू पार कर चुके हे। लड़का बच्चा गांम छोड़ छोड़ कै अपनी बहुरियन नें लै लै कें जाय चुके हे। गाम में बुढ़ऊ अकेले ई रहते। फिर जो कछू थोरौ बहौत हतौऊ तौ सिगरौ ठिकाने लग चुकौ हो। छोरा छोरीन की सादीन में बहौत सो खरचा है गयो और रह्यौ सह्यौ जा किसन की सादो में ठिकाने लग गयो। अब थोड़ौ सौ करजा हू चल रह्यो हो।

"कैसे कैसे सपने मैंने संजोए हे।" रुकमिनि सोच रही ही। अपनौ घर होयगो। सुख ते रहिंगे। छोटे छोटे बच्चा किलकारी भारिंगे। कोई प्यार ते रखैगो। निहोरे करैगौ। मैं रूठौ करूंगी। मोहि कोई मनायौ करैगो। सोच सोच कें ही सरम ते लाल है जायौ करती। व्याह के इहाँ आई तौ सग आटे दार के भाव मालुम पड़ गए। इनकौ हू कहा दोस है। मेरे दादा हू कौनसे अमीर हे। राम राम करिकें मेरे हाथ पीरे करे। फिर और अच्छौ घर कहां ते मिलतौ। खैर जो भाग में बदौ है बोही तौ मिलैंगौ। जैसौ है तैसौ ही ठीक है। जाही में निभावनौ है।

दरबज्जें पें आहट भई। किसन आय गयौ। वाके संग दो छोरा हू हे। वाके रिस्ते के। गाम ते आए हे। रुकमिनि विन्हें देखिकें मन ही मन भुनिकें रह गई। सोचिवे लगो जे और बला आयीं। इहाँ तौ वैसें ही खाइवे के लाले पर रहे हैं। अब इक्कूं टिलाइबे कू कहाँ ते लाऊं ?"

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसन बोल्यौ—अरी रुकमिनि ! देख गौरू और मंगल आए हैं। कछू चाय वाय तौ बनाय ला। रुकमिनि जर भुनि गयी। धरे हैं तिलसटा। दूध कौ ठौर और न चीनी कौ ठिकानौ। मट्टी कौ तेल हू तौ नाहैं। अपने हाड़न ते चाय बनाऊँ। पर जे गिरह तौ टरवे वारी नाँय। बाखर ते कछू जुगाड़ करिकैं चाय बनायकैं देती भई बोली—लालाजी ! तिहारे घर में सग कुसल मंगल तौ है। चाय पी लो। फिर नहा धोइकैं खनौ वानौ खाइकैं आराम करियौं। तिहारौ ही घर है। कछू संकोच की जरूरत नांहै। तिहारे काका तौ ऐसे ही हैं। इन्हें पूछवे ताछवे की कछू आदत नांय। न ये आव भगत करनौ जानें।

गौरू और मंगल चार दिना रहे। जो कछू घर में हतौ सगकौ सुल्फा साफ कर गए। किसन नें जैसै तैसैं इधर उधर ते जुगाड़ करिकैं पार लगाई। सिर पैं कर्जा चढ़ गयौ। घर फिर भूखौ कौ भूखौ। छोरी के ताईं दूध चहिएं। घी की बूँद नाय रही। गेंहूँ थोड़े से रह गए। जाड़े लग चुके हैं। गरम कपड़ान की जुगती हू बिठामनी ही। किसन सोचतौ ही सोचतौ रह्यौ। कैसे करूँ - कहा करूँ। भीतर ते रुकमिनि बर्राय रही—कौला नांए। खानौ कहा अपने हाड़न ते बनाय दऊँगी। किसन कूँ बड़ी गुस्सा आई और वानें झट जाय तीन चार तमाचे रुकमिनि कैं जड़ दिए। रुकमिनि टप टप आँसू टपकाती रही। वाकी बड़ी बड़ी आँख सूजिकैं लाल है गयीं। वो सोचती रही-सोचती रही—कहा जे ही पुरिसारथ है।

किसन कौ तौ जी फट चलौ। वोऊ सोचतौ रह्यौ—कहा जे ही मेरौ पुरिसारथ है।

□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकांकी—

कदंब की छैंया

[वृन्दावन में बंसीवट पै जमुना कल कल छल छल करती बहती चली जाय रही है। पेड़न पै चिरैया चह चहाय रही हैं। गैया चराइबे वारे काहू ग्वारिया की बंसी की मद्दी मद्दी मधुर धुनि सुनाई पर रही है। दो युवक युवती तभी वहाँ आमें हैं। युवक कौ नाम स्याम और युवती कौ राधे है।]

स्याम—कैसौ रमणीक स्थल है जे बंसीवट! अरी राधे जे जमुना कौ सुन्दर तट, और कल कल छल छल करती जमुना कौ कारौ कारौ जल—चिरैयन की चहचान और कदंब के फूलन की जे मादक सुगंध। मेरौ तो मन ही हरै लेय है और देख वा पार दो ग्वारिया वा पेड़ के नीचै बैठे कैसी मधुर मधुर बंसी बजाय रहें हैं।

राधे—हाँ स्याम। बड़ौ ही मोहक है जे स्थल। यहाँ कितनी सांति है। कैसौ नैनाभिराम दृश्य है। यहीं तौ अपने कन्हैया नैं बंसी बजाई ही। जाही बंसीवट पै जाही कदम्ब के नीचै।

स्याम--हाँ राधे! इन्हीं कदम्बन के नीचै त्रिभंगी रूप में कन्हैया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नें मुरली की अदभुत तान छेड़ी हुँगी, जिनें सुनिकै ब्रज - गोपी तन - मन की सुध भूल गईं। अपनौ सग लाला कन्हैया के चरणन में न्यौछावर कर दियौ हो और गोपी ही कहा ब्रज के सिगरे जीव, पसु, पक्षी, लता - पता, बिरछ हू मुरली की अलौकिक तान ते बिंध गये हैं।

राधे—स्याम ! यहीं तौ भगवान क्रिष्न नै गाइ चराई हीं। सूर ने भी तौ कही है—

"चार पहर बंसीवट भटक्यौ,
साँझ परे घर आयौ।"

स्याम—हाँ राधे ! जे ही है वो स्थल जहाँ क्रिष्न गाइ चरायौ करते हैं। साँझ भई कै कदंब पैं चढ़िकै बंसी बजाइकै गायन कूं इकट्ठौ करकै ब्रज जाते हे—

चरावति बृन्दावन हरि धेन।
ग्वाल सखा सब संग लगाए,
खेलत हैं करि चैंन ॥
कोऊ गावत, कोऊ मुरलि बजावत,
कोऊ बिखान, कोऊ बैन।
कोऊ निरतत, कोऊ उघट तारि दें,
जुरि ब्रज बालन सैन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिविध पवन जहँ बहत निसि-दिन
सुभग कुंज घन अैन।
'सूर' स्याम निज धाम बिसारत,
आवत यह सुख लैन॥

राधे--और वो देखौ स्याम ! वह कौनसौ स्थल है। कितने रंग बिरंगे चीर लटके भये हैं वा पेड़ पै।

स्याम--अरे वही तौ चीर घाट है। कदम्ब वे पेड़ पै रंग रंग कै चीर लटक रहे हैं। यहाँ ब्रजगोपी नग्न है कैं जमुना में स्नान कर रही हीं। तभी क्रिष्न विनके चीरन नैं उठाइकै कदम्ब पै चढ़ गए। गोपीन नें अपने चीर तीर पै नांय देखे तौ बड़ी घबरायीं किंतु तभी विननें देखौ कै कन्हैया कदम्ब पै चीर लटकाय बैठौ आराम ते बंसी बजाय रह्यौ है।

राधे—फिर कहा भयौ।

स्याम—भगवान क्रिष्न नें वहीं कै तुम्हें नाय मालुम जल में वरुण देवता कौ निवास है। जाते नग्न है कै नहीं नहानौ चाहियै। छिमा मांगौ तभी वस्त्र मिलिंगे। गोपीन नें छिमा मांगी और भगवान नैं विनके वस्त्र लौटाय दए तभी ते जे स्थान चीरघाट कहाइबे लगौ।

राधे—लेऔ जा रज कू मस्तक पै धारन करौ। जे बड़ी पवित्र है। भगवान क्रिष्न के चरण-कमल इहाँ अंकित भयें हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्याम—हाँ राधे ! बड़ी पवित्र है जे रज। जाके ताईं बड़े बडे रिसी मुनी हू तरसैं। जा रज के प्रभाव ते ही मुसलमान हू जा रज के अनुरागी बन गये। बिनकी तो जेही अभिलासा ही—

कब बृन्दावन धरनि में चरन परैंगे जाइ।
लोटि धूर, धरि सीस पैं, कछु मुखहू में पाइ॥

राधे—रसखान हू तौ मुसलमान भक्त हे। वो तौ ब्रज - वास के आगे कछू नांय चाहते—

मानुस हौंऊँ तौ वही रसखानि,
बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौंऊँ तौ, कहा बस मेरौ,
चरौं नित नन्द की धेन मँझारन॥
पाहन हौंऊं तौ वही गिरि कौ,
जो धरचौ कर छत्र पुरन्दर कारन।
जौ खग हौंऊं तौ बसेरौ करौं,
मिलि कालिंदी कूल कदम्ब की डारन॥

स्याम—सेख हू तौ मुसलमान ही। बिननें भी तौ कही है—

जब सुधि आवै तब तन बिनु - सुधि होत,
बन - सुधि आएँ मन होत पात - पात है।
'सेख' कहैं सरद - सहेट के वे गीत गुनि,
बाँसुरी की धुनि रसाल गान गात है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधे—और वो छवी तौ मेरे चित्त ही कू चुराय लेयै है जब भगवान क्रिष्न नें बरसा रितु में कदम्ब के नीचे राधाजी के संग बँसी बजाई हो। जा छवी कौ कैसौ सुन्दर बरनन हू मिलै है—

(राग मल्हार)

कदम्ब तर ठाड़े हैं पिय-प्यारी।
मोहन के सिर मुकुट बिराजत,
इत लहरिया की सारी॥
मंद मंद बरसत चहुँ दिसि तें,
चमकत बिज्जु घटा री।
मुरली बजावत श्री नन्द नन्दन,
गावत राग मल्हारी॥
लेत तान हरि के संग राधा,
रंग होत अति भारी।
'श्री बिट्ठल गिरिधर' कों रिझावत,
श्री बृषभान दुलारी॥

स्याम—इन कदम्बन की छैयन में करे गये रास - विलास ही क्रिष्न के वियोग में गोपीन कू हृदय - विदारक है गये हे। तभी तौ क्रिष्न जी के अन्तर्धान हैबे पै बे इन ब्रज - वृक्षन और लता - पतान ते पूछती भईं—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नूत प्रियाल पनसासन कोविदार
जम्ब्वर्क बिल्ववकुलाम्र कदम्ब नीपाः ।
येऽन्ये परार्थं भवका यमुनोपकूलाः
शंसन्तु कृष्णपदवीं रहितात्मनां नः ॥

राधे—जाही भाव कूं भारतेंदु जी भी तौ कहैं—

अहो अहो वन के रूख कहूँ देख्यौ पिय प्यारौ ।
मेरौ हाथ छुड़ाय कहौ वह कितै सिधारौ ॥
अहो कदम्ब अहो अंब - निंब अहो बकुल, तमाला ।
तुम देख्यौ कहूँ मनमोहन सुन्दर नन्दलाला ॥

स्याम—आज हू ऐसौ लगै कै भगवान क्रिष्न यहीं कहीं लता-पतान की कुंजन में छिपें भए हैं ।

राधे—मोहि तौ विस्वास है चलौ है कै हमें यहाँ भगवान श्री क्रिष्न के दरसन अवस्य होमिगे । रसखान ने हू तौ बिनैं सब जगह ढूंढौ पर मिल्यौ कुंज - कुटीर में ही—

ब्रह्म मैं ढूंढ्यौ पुरानन गानन,
वेदरिचा सुनी चौगुनी चायन ।
देख्यौ सुन्यौ कबहूँ न कहूँ,
वह कैसे सरूप और कैसे सुभायन ॥
टेरत टेरत हारि पर्यौ,
रसखानि बतायौ न लोग लुगायन ।
देख्यौ दुरौ वह कुंज-कुटीर में,
बैठौ पलोटत राधिका पायन ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्याम--राधे अब तौ बस मेरी जे ही इच्छा है—

कदम्ब की छाँह होय जमुना कौ तट होय।
अधर मुरली होय माथे पै मुकुट होय॥
खड़े क्रिष्न होंय इक बांकी अदा से।
मुकुट झौंके में होय मौजे हवा से॥
गिरैं गरदन ढुलक कै पीत पट पै।
खुली रह जांय जे अँखियाँ मुकुट पै॥
दुसाले की एवज हो ब्रज को वो धूल।
पड़े बिखरे हों जहाँ सिंगार के फूल॥
मिलें जलने को लकड़ी ब्रज के हौ वन की।
छिड़क दी जाय धूली या सदन की॥
अगर इस तौर हो अंजाम मेरौ।
तुम्हारा नाम हो काम मेरौ॥

राधे—चलो स्याम! अब तौ मैं भी जे ही चाहूँ—

निकल जामैं दम जा कदम की ही छैयां।
यही मेरी हसरत यही आरजू है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रज-साहित्य और संस्कृति के आराधक

श्री राधेश्याम अग्रवाल और उनका ब्रज साहित्य

श्री राधेश्याम अग्रवाल ब्रज के प्रमुख साहित्यकार हैं, जिन्होंने गद्य तथा पद्य दोनों में ही साहित्य का सृजन किया है।

गद्य में उनके द्वारा लिखित निबंध विशेष महत्वपूर्ण हैं। ये निबंध ब्रज साहित्य एवं ब्रज-संस्कृति संबंधी ज्ञान के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। विद्वानों ने इनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

गद्य-साहित्य

श्री राधेश्याम अग्रवाल के निम्नांकित निबंध संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं :—

(१) ब्रजगंधा—यह हिन्दी भाषा में रचित निबंध-संग्रह है, जो साहित्य - भारती, मथुरा द्वारा प्रकाशित किया गया है। इसमें ब्रज - साहित्य और संस्कृति विषयक निबंध संग्रहीत हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) **ब्रज-वल्लरी**—का प्रकाशन भी साहित्य-भारती, मथुरा द्वारा किया गया है। यह निबन्ध - संग्रह हिन्दी जगत् में प्रथम बार ब्रजभाषा गद्य में प्रकाशित हुआ है। उ. प्र. सरकार के हिन्दी संस्थान ने इसको पुरस्कृत किया है।

(३) **ब्रज-सौरभ**--इसमें ब्रज के परिवेश को ब्रजभाषा गद्य में अभिव्यक्त किया गया है।

ब्रज-गंधा

इस पुस्तक के संबंध में विभिन्न विद्वानों ने अपने जो विचार अभिव्यक्त किये हैं, उन्हें हम यहाँ संक्षेप में दे रहे हैं—

प्रोफेसर श्री कृष्णदत्त बाजपेयी,
सागर विश्वविद्यालय, सागर।

ब्रज के साहित्य - शिल्पी श्री राधेश्याम अग्रवाल ने 'ब्रज-गंधा' में ब्रज क्षेत्र का तथा उसके अनेक आचार्यों का परिचय दिया है। इन निबन्धों में ब्रज के उस स्पृहणीय रूप के दर्शन कराने का प्रयास किया है जिसमें भारतीय धर्म, साहित्य, कला और लोकवृत्त मधुर रूप में व्याप्त है। यह कृति अपने उद्देश्य में सफल है।

डा. कैलाशचन्द्र भाटिया,
भू. पू. प्रोफेसर, राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मंसूरी (उ. प्र.)

'ब्रज-गंधा' के निबन्धों में विषय की दृष्टि से पर्याप्त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैविध्य होते हुए भी 'व्रज-भाव' केन्द्रीय रूप में विद्यमान है। संकलन के प्रारम्भ में 'भ्रमरगीत-परम्परा' पर विस्तृत निबन्ध है जिसमें सभी दृष्टियों से विवेचन किया गया है—मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार महत्वपूर्ण है। ऋतु वर्णन के शरद, बसन्त, होली सम्बन्धी लेखों में विशिष्ट सामग्री उल्लेखनीय है। प्रस्तुत निबन्ध संकलन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना है—कविवर प्रेमसखी और कविवर लाल बलवीर। दोनों कवि-बन्धुओं पर पहली बार हिन्दी जगत् का ध्यान आकर्षित किया गया हैं जिनके आधार पर शोध कार्य भी संपन्न किये गये हैं।

विभिन्न निबन्धों में विषय के अनुसार प्रतिपादन शैलियाँ भिन्न हैं। हर निबन्ध ने अपनी अभिव्यक्ति की शैली स्वयं खोजली है। निश्चय ही इन निबन्धों से पाठकों का मनोरंजन तथा ज्ञान-वृद्धि होगी।

श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी

संपादक, लोक-शिक्षक, पाक्षिक जयपुर।

ब्रज साहित्य और संस्कृति सम्बन्धी निबन्ध संग्रह 'ब्रज-गंधा' में कतिपय चुने हुए निबन्धों का समावेश करके पाठकों का ध्यान 'ब्रज-भाषा' के साहित्यिक महत्व और उसकी उपयोगिता की ओर आकृष्ट किया गया है।

ब्रज भाषा जो एक समय समग्र देश की साहित्यिक तथा काव्य-भाषा रह चुकी है अब सिमट कर ब्रजांचल तक ही सीमित हो गई है। अब भी यदि उसके उद्धार और उत्थान की ओर गंभीरता पूर्वक ध्यान नहीं दिया गया तो यहां से भी उसकी जड़ उखड़ सकती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस संग्रह में भ्रमरगीत परम्परा, सूरकाव्य में सूक्तियाँ से लेकर ब्रज भाषा और आज का युग तथा 'ब्रज भाषा के अध्ययन में विदेशी विद्वानों के सम्मुख बाधाएँ, आदि जिन विषयों का समावेश किया है, वे अत्यन्त महत्वपूर्ण और सामयिक हैं। साथ ही ब्रज भाषा के अज्ञात और अल्पज्ञात कवियों का तथा उनकी प्रतिनिधि रचनाएँ देकर संग्रह को निःसंदेह उपयोगी बनाया गया हैं।

लेखक के ब्रज भाषा के प्रति इस प्रेम की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। इसके लिए मैं लेखक को बधाई अर्पित करता हूँ।

प्रबुद्ध साहित्यकार श्री रामेश्वर दयाल दुबे, लखनऊ।

ब्रज और ब्रजभाषा के साहित्य के संबन्ध में इतनी प्रचुर सामग्री 'ब्रज-गंधा' में दी गई है कि यह पाठकों के लिए एक संदर्भ ग्रन्थ का काम करेगा। 'भ्रमरगीत परम्परा' वाला लेख काफी खोजपूर्ण हैं।

डा. केशवदेव शर्मा,

भू. पू. अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, बी. एस. ए. कालिज, मथुरा।

'ब्रज-गंधा' में अत्यन्त रुचिकर, महत्वपूर्ण और शोधपूर्ण सामग्री दी गई है। ब्रजभाषा और ब्रज-साहित्य के अध्येताओं के लिए यह एक उपयोगी ग्रन्थ है।

ब्रज-बल्लरी

[उ. प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत]

यह पुस्तक ब्रज-भाषा गद्य में लिखी गयी है। ब्रज-भाषा गद्य-साहित्य में यह निबन्ध-सग्रह प्रथम बार प्रकाशित हुआ है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अमर उजाला' दैनिक ने प्रस्तुत पुस्तक के विमोचन के समाचार को प्रकाशित करते हुए इस तथ्य को इंगित किया है, जिसकी प्रतिलिपि हम नीचे दे रहे हैं—

ब्रजभाषा गद्य का प्रथम निबंध-संग्रह

ब्रज-बल्लरी

श्री राधा आविर्भाव महोत्सव के अन्तिम दिन ब्रज के अनेक कवियों और विद्वानों की उपस्थिति में ब्रज-विदुषी कृष्णा माँ ने साहित्य-भारती, मथुरा द्वारा प्रकाशित और श्री राधेश्याम अग्रवाल द्वारा रचित 'ब्रज-बल्लरी' नामक निबंध-सग्रह का विमोचन किया और पुस्तक की प्रथम प्रति श्री राधारानी जू के चरणों में समर्पित की। ब्रज भाषा गद्य में यह निबन्ध-संग्रह प्रथम बार प्रकाशित हुआ है।

(अमर उजाला दैनिक, १३ सितम्बर १९८४ ई०)

ब्रज - साहित्य के मर्मज्ञ एवं सुधी विद्वान
स्व० डा. प्रभुदयाल मीतल डी. लिट ने लिखा है कि—

'ब्रज-वल्लरी' में संकलित ब्रजभाषा गद्य के सभी लेख रोचक एवं पठनीय हैं। ब्रज और ब्रजभाषा साहित्य के लिए किया गया यह योगदान प्रशंसनीय है। आशा है इसमें और भी वृद्धि होगी।

रस - संस्कृति एवं साहित्य की प्रतिनिधि पत्रिका— 'रस-निकुंज' ने टिप्पणी की है कि—

ब्रजभाषा गद्य के क्षेत्र में श्री राधेश्याम अग्रवाल द्वारा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत निबन्ध-संग्रह 'ब्रज-ब्लरी' एक महत्वपूर्ण कृति है। सूर की भाषा को गद्य रूप में विकसित करने की दिशा में यह एक सार्थक प्रयास हैं। चौदह निबन्धों के इस संग्रह में 'लाल बलबीर' ब्रज के अल्पज्ञात कवि श्री भंडारी जी एवं 'आवत बसंत रितुराजे कहियत है' शीर्षक निबन्ध इनकी विषय प्रतिपादन की अपूर्व क्षमता के द्योतक हैं। जबकि ब्रजभाषा गद्य अपने विकास के प्रथम चरण में है तब इस निबन्ध-जैसी विधा का प्रणयन निश्चित रूप से प्रशंसनीय है। शैली, वाक्य-योजना, एवं शब्द-चयन की दृष्टि से इन्हें ब्रजभाषा के 'बालकृष्ण भट्ट' कहना अनुचित नहीं होगा।

डा. विश्वनाथ शुक्ल रीडर,

भू. पू. अध्यक्ष हिन्दी विभाग, मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

'ब्रज-बल्लरी' की रचना करके आपने जो महत्वपूर्ण कार्य किया है, वह प्रशंसनीय है। विद्वान आपके कार्य का अवश्य ही मूल्यांकन करेंगे।

डा. कैलाशचन्द्र भाटिया,

भू. पू. प्रोफेसर राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मंसूरी

'ब्रज-बल्लरी' प्रस्तुत करके श्री राधेश्याम अग्रवाल ने ब्रजभाषा के गद्य क्षेत्र को समृद्ध बनाने में योगदान किया है। ब्रजभाषा के गद्य रूप को विकसित करके हिन्दी साहित्य का अपूर्व भण्डार भरने का प्रयास अति प्रशंसनीय है।

ब्रज-बल्लरी की ब्रजभाषा सरल, सहज और सुलभ है। निबन्ध विषय और शीर्षक के प्रतिपादन की अपूर्व क्षमता प्रकट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में समर्थ हैं। सभी निबन्ध व्रज के प्रचलित और प्रसिद्ध जन-जीवन से सम्बन्धित हैं। निबन्धों की शैली प्रांजल, वाक्य-योजना परिष्कृत तथा शब्द-चयन उपयुक्त है। इस प्रकार यह पुस्तक ब्रजभाषा के गद्य के क्षेत्र में विकसित करने की दिशा में एक सार्थक तथा सराहनीय कदम है।

सुप्रसिद्ध ब्रज - साहित्य रचनाकार पद्मश्री पं० गोपाल प्रसाद व्यास ने व्रज-बल्लरी को श्रेष्ठ रचना स्वीकारकरते हुए लिखा है—

'व्रज-वल्लरी' पुस्तक ऐसो है जैसे सोने में सुहागा। हमारी व्रज भाषा तो शुद्ध सोना है उसमें सुहागा मिलाकर श्री राधेश्याम अग्रवाल ने इसकी चमक चौगुनी कर दी है। व्रज के भूतकाल का सुन्दर चित्रण किया है तो भविष्य को परखने की पकड़ भी हमें इसमें लक्षित हुई है।

लाल बलवीर और भंडारो जी पर लिखे गए लेख हमें बहुत रुचे। ऋतु, पर्वत और मेला - ठेलान पर इसमें सुन्दर सामग्री है। साहित्य के साथ ही साथ लोक साहित्य पर भी इनकी पैनी नजर है। ब्रजभाषा में और व्रज जनपद में तथा इसके साहित्य में जिनको रुचि हो वह इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। हमारा पक्का विचार है कि इस पुस्तक के पढ़ने से पाठकों में ब्रज के प्रति सरल भावना अवश्य अवश्य जागृत होगी। अधिक क्या लिखें, संक्षेप में यही कहते हैं—'कीरति कौ बिरवा यह है याकूं कबहु कुम्हिलान न दीजै।'

डा. केशवदेव शर्मा,

भू. पू. अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, बी. एस. ए. कालेज, मथुरा

'व्रज-बल्लरी' के प्रकाशन से व्रजभाषा गद्य के क्षेत्र को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नया आयाम मिला है। भारतेन्दु युग से पूर्व ही ब्रजभाषा में निबन्धों की परम्परा नहीं रही। भारतेन्दु युग में भी काव्य की भाषा तो ब्रज भाषा अवश्य थी किन्तु गद्य की भाषा ब्रजभाषा गर्भित हिन्दी थी। निबन्धों का स्वरूप तो बहुत विलंब से निर्धारित हुआ। ब्रजभाषा गद्य का विकास आज के युग की महती आवश्यकता है। इस क्षेत्र में श्री राधेश्याम अग्रवाल द्वारा लिखित ब्रजभाषा गद्य निबन्ध-संग्रह 'ब्रज-वल्लरी' से एक नव द्वार उन्मुक्त हुआ है। इसे ब्रजभाषा गद्य का प्रथम प्रकाशित निबंध संग्रह कहा जाना चाहिए।

श्री राधेश्याम अग्रवाल ब्रजभाषा और साहित्य के प्रति समर्पित शिल्पी हैं। उनके इस प्रयास की मैं हृदय से सराहना करता हूँ और उनके भावी सृजनशील व्यक्तित्व के विकास की शुभ कामना व्यक्त करता हूँ।

ब्रज - साहित्य - संस्कृति के युग - पुरुष ब्रज - विभाकर **स्व० ज्यो० राधेश्याम द्विवेदी ने लिखा था—**

'ब्रज बल्लरी' ने मेरे मन को सरसा दिया है। हरी भरी लता-पतान के बिना तो ब्रज सूना ही माना जायगा। ब्रज के वन उपवन की शोभा तो वैसे भी इस युग में कम होती जा रही है। बढ़ती आबादी वन - उपवन की शोभा को नष्ट किए दे रही है। पर साहित्य-उपवन की प्रस्तुत बल्लरी तो पाठक के तन-मन-आत्मा सभी को अपने समान ही हरी भरी कर दे रही है।

श्री राधेश्याम अग्रवाल वर्षों से साहित्य की मूक साधना में लगे हुए हैं। उनकी रचनाओं का मुद्रित संग्रह देखकर मेरी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा को बड़ी प्रसन्नता हुई। इस संग्रह में उन्होंने लोक-जीवन, लोक-साहित्य के छोरों को तो छूआ ही है, ब्रजभाषा के कुछ कवि और साहित्य पर भी बहुत सुन्दर सामग्री दी है। हमारे ब्रज के अनेक यशस्वी रचनाकार जगत के सम्मुख प्रकाशित ही नहीं हो पा रहे हैं। उनकी कीर्ति-रक्षा के प्रयास से ब्रजभाषा साहित्य के कोश की भी समृद्धि बढ़ेगी। इस दृष्टि से अग्रवाल जी का यह प्रयास बड़ा हितकर और सुन्दर बना है। ब्रजभाषा गद्य के कारण इस पुस्तक का महत्व और अधिक बढ़ गया है।

श्री लक्ष्मीशंकर व्यास

भू० पू० संपादक—दैनिक आज, वाराणसी

ब्रज की संस्कृति तथा उसकी विशेषताओं को व्यक्त करने वाली विशिष्ट सामग्री आपने दी है। हार्दिक बधाई। मुझे विश्वास है कि 'ब्रज-बल्लरी' का हिन्दी जगत अभिनन्दन करेगा।

श्री कृष्ण चैतन्य भट्ट 'राकेश'

भू. पू. अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, प्राच्यदर्शन विद्यापीठ, वृन्दावन

तिहारी ब्रज-बल्लरी पुस्तक मिली। जा निरदयी काल कौ और पछाँह की आई भई हवा तैं सबहिन तै घातक नासु हमारी अपनी माटी में रसी बसी बोलीन को भयौ है। जामें राजधानी के निकट होयबे कौ डण्डा गहिरौ जितनौ ब्रज और ब्रज वासीन के माथे परयौ है उतनौ और कहूँ नाँय। तुम्हारौ ऐसौ प्रेम सदा सर्वदा बन्यौ रहै और अपने पुरखन की सींचौ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भई बेल ऐसे ही लहलहाती रहै। तिहारै जैसे सौ दो सौ लेखनी के धनीन की बाटि जोहि रहे हैं।

प्रसिद्ध विद्वान डा० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, आगरा

मैंने आपकी दोनों कृतियां ब्रजगंधा और ब्रज-वल्लरी पढ़ी। पढ़कर मजा आ गया। ब्रजभाषा की मिठास से तृप्त हो गया। अनेक पुरानी परम्परायें आँखों के सामने घूम गयीं। ब्रजभाषा में इतना सुन्दर गद्य लिखने के लिए आप बधाई के पात्र हैं तथा इसको ब्रजभाषा के प्रेमियों के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं।

डा० लक्ष्मीनारायण दुबे,
रीडरी, हिन्दी विभाग, सागर विश्वविद्यालय, सागर

श्री राधेश्याम अग्रवाल एम. ए. साहित्यरत्न ब्रज-संस्कृति के मर्मज्ञ ही नहीं हैं अपितु उसके श्रेष्ठ रचना कर्मी भी हैं। उनकी सृजन-धर्मिता का प्रत्येक कण-कण 'ऊधौ मोहि ब्रज बिसरत नाहीं' में रचा पचा है। उनका साहित्य की अनेक विधाओं पर समान और सम्यक अधिकार है यथा काव्य निबंध, आलोचना और पत्रकारिता। वे अपनी संगठन शक्ति और साधनों का सदुपयोग साहित्य और संस्कृति के उन्नयन में सदा-सर्वदा निष्ठा पूर्वक करते रहते हैं।

उनकी 'ब्रज-वल्लरी' ब्रजभाषा में लिखित गद्य का स्तरीय-निदर्शन है तो दूसरी ओर किसी भी भाषा को उसकी महत्ता-इयत्ता तथा गरिमा उसके गद्य से ही प्राप्त होती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रजभाषा भाषा होते हुए भी गद्य के प्रचुर अभाव के कारण बोली बनकर रह गयी जबकि खड़ी बोली बोली होते हुए भी गद्य की विपुलता तथा सर्वतोमुखी रूप के कारण आज की हिन्दी की बिंदी बनकर राष्ट्रभाषा के राजसिंहासन पर आरूढ़ हो गई।

इसमें कोई संदेह नहीं कि श्री राधेश्याम अग्रवाल ने ब्रजभाषा को गद्य में सफलता तथा सार्थकतापूर्वक बांधकर, न केवल ब्रजमाधुरी की ममता को उद्‌बुद्ध किया है, प्रत्युत हिन्दी वाङ्मय की भी अपूर्व सेवा की है। ब्रजभाषा गद्य मे यह निबंध संग्रह प्रथम बार प्रकाशित हुआ है जिसका आत्मिक तथा आह्लाद के रूप में यत्र-तत्र-सर्वत्र स्वागत किया जाना चाहिए। यह एक उल्लेखनीय कृति है और उसने श्री राधेश्याम अग्रवाल को ब्रज-शिल्पी के रूप में पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठित कर दिया है।

कविवर डा० त्रिलोकीनाथ ब्रजबाल, मथुरा

'ब्रज-बल्लरी' बन्धुवर श्री राधेश्याम जी अग्रवाल का ब्रजभाषा में लिखे ब्रज-संस्कृति-विषयक निबंधों का संग्रह है। उनका प्रथम निबंध-संग्रह 'ब्रजगंधा' था जो एक वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था। श्री राधेश्याम अग्रवाल जन्म जात ब्रजवासी हैं अतएव, ब्रज, ब्रजभाषा, ब्रज-संस्कृति और ब्रज-साहित्य में उनकी गहरी अभिरुचि तथा पकड़ है। उनके समान साहित्यिक कला-सुरुचि सम्पन्न युवा व्यवसायी मथुरा जनपद में इस समय दूसरा नहीं है। अपनी व्यावसायिक व्यस्तताओं में रहते हुए भी जिस निष्ठा से वे ब्रज-साहित्य-उन्नयन में सक्रिय हैं,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी में हृदय से सराहना करता हूँ। मुझे आशा है, 'ब्रज-बल्लरी' ब्रज-साहित्य के आधुनिक गद्य में एक उल्लेखनीय कृति सिद्ध होगी।

डा० नरेन्द्र त्रिपाठी,

सचिव साहित्य-संगम, नई दिल्ली

श्री राधेश्याम अग्रवाल की 'ब्रज-बल्लरी' में ब्रजभाषा का सौंदर्य और माधुर्य अभिव्यंजित हुआ है। इससे ब्रजभाषा गद्य की सक्षमता प्रकट होती है। ऐसी सशक्त गद्य लिखने के लिए वे अभिनंदनीय हैं। 'ब्रज को लोक साहित्य,' 'ब्रज लोक-संस्कृति में कहावतें—किवंदती' 'तीन लोक सौं मथुरा न्यारी' निबंध मनोरंजन के साथ ही युवा-पीढ़ी को नई जानकारी प्रदान करते हैं।

आचार्य जुगलकिशोर चतुर्वेदी,

प्रधान मन्त्री, अ० भा० ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा

ब्रजभाषा गद्य में टीकाएँ, वार्ताएँ, नाटक, अनुवाद, आयुर्वेद-ज्योतिष के ग्रन्थ पर्याप्त संख्या में रचे गये हैं। पं० लल्लूराम का 'प्रेमसागर' 'ब्रजभाषा गद्य की मधुर रचना होने के कारण जनता का कण्ठहार बना हुआ है। नवयुग के आलोक में ब्रजभाषा गद्य में उपन्यास भी प्रकाशित हुए हैं। ब्रजभाषा गद्य में निबंध-रचना के क्षेत्र में श्री राधेश्याम अग्रवाल लिखित 'ब्रज-बल्लरी' प्रथम प्रकाशित कृति है। इससे ब्रजभाषा गद्य के निबंधों को नया आयाम मिलेगा। प्रस्तुत पुस्तक में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ ब्रज लोक-संस्कृति और ब्रज लोक-साहित्य के क्षेत्र का संस्पर्श किया गया है वही ब्रजभाषा के कुछ अल्पज्ञात कवियों पर भी प्रकाश डाला गया है।

कविवर श्री रामेश्वरदलाल दुबे, लखनऊ—

'ब्रज-वल्लरी' में ब्रजभाषा का गद्य रूप पाठकों की ब्रजभाषा के माधुर्य से परिचित कराएगा। दो चार नमूने पर्याप्त हैं। आपने इस पुस्तक में ब्रजभाषा की कविता के माधुर्य को दोनों हाथ लुटाया है। ब्रज सम्बन्धी काफी जानकारी इस पुस्तक में आपने दी है। इस पुस्तक को पढ़ते हुए समय यही लालसा हुई कि ब्रज का निबासी होता तो कितना अच्छा होता।

डा० नारायणदत्त शर्मा,
भू० पू० मंत्री, भारती अनुसंधान भवन, मथुरा

आपने ऐसे अछूते क्षेत्र को स्पर्श किया है, जो बहुत महत्वपूर्ण है और जिसकी अत्यन्त आवश्यकता है। आपका प्रयास सराहनीय है।

राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी, जयपुर की मुख पत्रिका 'ब्रज शतदल' में प्रकाशित समीक्षा

ब्रजभाषा में साहित्य-रचना की परम्परा बहुत प्राचीन है। इसमें भी काव्य-रचना का इतिहास बहुत पुरातन कहा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। परन्तु ब्रज वार्ताओं के अलावा ब्रजभाषा में गद्य साहित्य तो नगण्य ही है। ब्रजभाषा के गद्य-साहित्य के अभाव से उसका इतिहास अब तक देखने में नहीं आया। इस दृष्टि से राधेश्याम अग्रवाल की 'ब्रज-बल्लरी' बहुत महत्वपूर्ण है। ब्रजभाषा गद्य के विकास के संदर्भ में यह पुस्तक सुदृढ़ कड़ी है।

समग्र रूप से यह प्रयास स्तुत्य और प्रेरणा दायी है। ब्रजभाषा गद्य के विकास के लिए नया द्वार लेखक ने खोला है। नया आयाम दिया है। इसलिए श्री राधेश्याम अग्रवाल इस प्रयास के कारण वन्दनीय हैं।

—डा० गिरिराजशरण शर्मा

श्री रामनारायण अग्रवाल,
महामंत्री अ० भा० ब्रजकला केन्द्र—

श्री राधेश्याम अग्रवाल ने 'ब्रज-बल्लरी' में ब्रजभाषा का जो मनोहारी गद्य रूप प्रस्तुत किया है, वह उन महानुभावों के लिए खुली चुनौती है जो कहते हैं कि ब्रजभाषा केवल पद्य की ही भाषा है, उसमें आधुनिक भावों की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। आपकी इस रचना को मैं सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानता हूँ।

श्री अग्रवाल की दूसरी रचना 'कदम्ब के फूल' की महक का मैं कायल हूँ। सहज, सरल और स्पष्ट शैली में पुराण-साहित्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर आपका यह विवेचन बड़ा उपयोगी है। भारतीय और पाश्चात्य दृष्टिकोण का समन्वय करके आपने मिथक व पुराणों की जो तुलना की है, वह साहित्य और संस्कृति के अध्येताओं के लिए बड़ी उपयोगी है। 'ब्रज-संस्कृति के विकास में वैष्णवाचार्यों का योगदान' लेख भी बड़ा ज्ञान वर्द्धक और ऐतिहासिक है।

श्री रामकृष्ण शर्मा एम. ए. ने लिखा है –

ब्रज - बल्लरी श्री राधेश्याम अग्रवाल की रचना - यात्रा का मानक स्तम्भ है। यह पुस्तक चौदह रचनाओं का संग्रह है। इस संग्रह की मुख्य विशेषता है अभिव्यक्ति का माध्यम ब्रजभाषा होना। निःसंदेह ब्रजभाषा प्रचुर शब्द-भंडार की स्वामिनी है फिर भला वह अपने क्षेत्र, अपने परिवेश, अपनी संस्कृति की अभिव्यक्ति के लिए किसी अन्य भाषा का अवलम्ब क्यों ग्रहण करें। रचनाकार इस ध्येय में पूर्ण रूपेण सफल रहा है।

डा० भगवान सहाय पचौरी,

संपादक ब्रज-भारती–अ. भा. ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा

ब्रज बल्लरी और लेखक की पूर्व प्रकाशित 'ब्रज-गंधा' नामक पुस्तक के अवलोकन से ब्रजभाषा गद्य के नवनवायमान अंकुरण की सदाशा पुलकित होती है। तमाम घोषणाओं के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बावजूद कि ब्रजभाषा मृतभाषा है, ढेर सारी निराशाओं के मेघाडम्बर के बीच से बार-बार अंगड़ाई लेकर ब्रज गद्य की विद्युच्चमक कोंध-कोंध कर आश्वस्त करती है कि हमारे जीवन के सांस्कृतिक आंगन भले हो खड़ी बोली के चाकचिक्य पूर्ण नर्त्तन-प्रदर्शन से झंकृत हों, अंधेरे कोनों से उसके प्रेरणा-स्रोतों की स्वामिनी ब्रजभाषा का समृद्धि कोष रीता नहीं हुआ है। समस्त घोषणाएं असत्य सिद्ध हो जाती हैं जब हम ब्रजभाषा के विविध विधाओं के सद्य प्रकाशित साहित्य को देखते हैं। ब्रज-बल्लरी की फुनगियों, वृन्तों और पल्लवों से ब्रज-संस्कृति का हरापन छलक रहा है।

ब्रज भाषा गद्य के माध्यम से साहित्य, लोक-साहित्य, और संस्कृति पर प्रकाश डालने वाली यह हमारी दृष्टि में पहली पुस्तक है। ब्रजभाषा गद्य के लिए 'ब्रज-बल्लरी' की रचना एवं प्रकाशन शुभ संकेत है। लेखक निश्चय ही शत शत साधुवाद का अधिकारी है। ब्रज-बल्लरी का सर्वत्र यथेष्ट स्वागत होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

डा० बाबूलाल गोस्वामी,
श्यामलाल कालिज, शाहदरा, दिल्ली

मैंने आपकी ब्रज-रचनाओं का आनन्द दिया है। ब्रज भाषा गद्य को प्रतिष्ठित करने के लिए भगीरथ प्रयत्नों की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता है। इस कार्य में जी जान से जुटना आवश्यक है। यह एक अछूता क्षेत्र है और इसमें स्तरीय साहित्य प्रभूत मात्रा में प्रकाशित हो और उसके प्रचार-प्रचार की समुचित व्यवस्था हो तभी ब्रजभाषा जीवित रह सकेगी। वास्तविकता तो यह है कि हम और हमारे ब्रजभाषा भाषी साहित्यकार ही ब्रजभाषा साहित्य को सम्मानित करने से कतराते हैं। हमसे पहली प्रतिभावान साहित्यिक पीढ़ी ने खड़ी बोली का ही झण्डा उठाया और हिन्दी के नए रूप की आरती उतारने में लगे रहे। आशा है आपके सत्यप्रयासों से इस ठुकरायी गयी भाषा को आश्रय मिलेगा।

दुर्भाग्य तो यह है कि शासन की ओर से भी ऐसी कोई योजना नहीं कि, ब्रजभाषा का संरक्षण हो सके। आपके कृतित्व के लिए मेरी शुभकामनाएं और बधाई।

श्री बालमुकुन्द चतुर्वेदी, विद्या वारिधि, मथुरा

श्री राधेश्याम अग्रवाल ने 'ब्रजगंधा' और 'ब्रज बल्लरी' की रचना करके स्तुत्य कार्य किया है। ब्रजभाषा के उपेक्षा युग में अपनी रचनाएं ब्रजभाषा गद्य और ब्रजभाषा के लोक पक्ष को उजागर करने वाले निबंधों के रूप में प्रस्तुत कर उपादेय कार्य किया हैं। ब्रजभाषा में निबन्ध रचना एक नवीन चेतना का सन्देश है। लेखक का प्रयास सराहनीय है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदम्ब के फूल

एक प्रौढ़ एवं परिपक्व कृति

डा० लक्ष्मीनारायण दुबे, सागर विश्वविद्यालय, सागर

श्री राधेश्याम अग्रवाल बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उन्होंने विभिन्न विधाओं में अपने साहित्य की सजना की है। उनके निवन्धकार की छवि को उनके निबन्ध संग्रह 'कदम्ब के फूल' ने सम्यक् तथा श्रेष्ठ संस्थिति प्रदान की है। 'कदम्ब के फूल' शीर्षक से ऐसा आभासित होना है कि, यह या तो ललित निबंधों की कृति है अथवा प्रकृति परक रचनाओं का संकलन परन्तु इसमें सुचिंतित, विचारोत्तेजक एवं समीक्षात्मक लेखों की प्रमुखता है जिनके द्वारा श्री अग्रवाल के वैदुष्य, पाण्डित्य तथा बहुश्रुत होने का सात्विक प्रमाण मिल जाता है।

ब्रजवासी होने के कारण और ब्रज संस्कृति के प्रति अपनी जन्मजात सहज आसक्ति, आत्मीयता तथा संस्कार होने के निमित्त इस संग्रह का शीर्षक उनके इसी पक्ष के साथ न केवल न्याय ही करता है अपितु समुचित औचित्य का निर्वाह भी करता है। कदम्ब का नाम सुनते ही न केवल भगवान बालकृष्ण का स्मरण हो आता है प्रत्युत समूचा कृष्ण-काव्य, वात्सल्य एवं श्रृंगार रस, ब्रजभाषा तथा काव्य का एक प्रोज्ज्वल एवं विराट बिम्ब भी समुपस्थित हो जाता है। कदम्ब के नीचे बैठकर शीतलता और सुगन्ध से तन-मन-आत्मा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय आनन्द में डूब जाती है। निबन्धों में विषय के प्रतिपाद्य विश्लेषण में मन-कदम्ब पुष्पित एवं प्रफुल्ल होकर गदराने और महकने लगता है। इसलिए लेखक को इन निबन्धों के लिए यह शीर्षक सर्वथा उपयुक्त, सटीक, समीचीन और सार्थक प्रतीत हुआ।

यह निबन्ध-संग्रह भारतीय-संस्कृति के आधार स्तम्भों से अपनी यात्रा का श्रीगणेश करके ब्रज - संस्कृति, काव्य की शास्त्रीय संस्कृति और तुलसी की विश्व - शांति संस्कृति में अपनी सच्ची परिणति पाता है।

लेखक के इस प्रौढ़ एवं परिपक्व निबंध - संग्रह का हार्दिक स्वागत है।

राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी, जयपुर की मुख पत्रिका 'ब्रज शतदल' में

प्रकाशित समीक्षा

कदम्ब के फूल

'कदम्ब के फूल' एक अनूठा निबंध संग्रह है। इसका प्रकाशन, साहित्य-भारती, १००/५ जगन्नाथपुरी, मथुरा से हुआ है। इस निबंध-संग्रह में हमारी संस्कृति के आधार स्तम्भ : पुराण, ब्रज-संस्कृति के विकास में वैष्णव धर्माचार्यों का योगदान तुलसी का विश्व-शान्ति संदेश और काव्य और उसके भेद नामक निबंध हैं जिनके लेखक श्री राधेश्याम अग्रवाल हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन संस्कृत साहित्य में वेदों के बाद पुराणों का ही सर्वाधिक महत्व है। विद्वान निबंधकार ने पुराणों का गहन अध्ययन, मनन और चिंतन करके निबंधों को लिखा है। निबंध शोध परक दृष्टि से लिखे गए हैं। साक्षी के लिए पाद-टिप्पणियाँ दी गई हैं। लेखक का प्रयास स्तुत्य है। इससे यह सिद्ध होता है कि विद्वान निबन्धकार ने गम्भीर अध्ययन करके लिखा है। निबन्धों की भाषा विषय के अनुरूप बन पड़ी है। निःसन्देह ग्रंथ पठनीय और ज्ञानवर्धक है।

डा० रामप्रसाद 'सुमन'

ब्रज साहित्य-मनीषी डा० प्रभुदयाल मीतल

'कदम्ब के फूल' के निबंध कदम्ब के फूल की भांति ही मोहक, सरस एवं सुन्दर हैं। मैंने इन्हें बड़ी रुचि पूर्वक पढा है। ऐसे सुन्दर एवं विद्वत्ता पूर्ण निबंध - लेखन के लिए बधाई।

प्रबुद्ध साहित्यकार रामेश्वर दयाल दुबे, लखनऊ।

ब्रज अध्येता, ब्रज प्रकृति, ब्रज का ले अनुराग।
विविध विधाओं में रहे शब्द - सृष्टि को पाग॥
बिन्दु बिन्दु में सिन्धु ले, ले 'कम्दब के फूल'।
किया विश्व प्रतिबिम्ब है, ब्रज बल्लरि अनुकूल॥
ब्रज - वल्लभ ब्रज धाम की, ब्रज - संस्कृति अभिराम।
ब्रज भाषा प्रेमी मधुर राधेश्याम ललाम॥

□

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'स्वतन्त्रता संग्राम और पौराणिक हिन्दी काव्य'

(लेखक : श्री राधेश्याम अग्रवाल)

पर प्राप्त कुछ अभिमत

□ डा० सुन्दरलाल कथूरिया, दिल्ली

भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम की संक्षिप्त झलक प्रस्तुत करने के उपरान्त आपने द्विवेदी युग के पौराणिक काव्यों में इस आँदोलन की अनुगूंज को सम्यक प्रकारेण सुनकर रेखांकित करने का स्तुत्य प्रयास किया है।

□ डा० रघुनाथ वासुदेव विवलकर, नासिक महाराष्ट्र

आपने भारत में अंग्रेजों के आगमन के पहले भारत में आए हुए विदेशियों के आगमन से लेकर विद्रोह के स्वर का आरंभ विकास का संक्षिप्त किन्तु प्रभावी विवरण देकर हिन्दी काव्य में स्वतंत्रता युगीन भावनाओं की अभिव्यक्ति का मूल्यांकन किया है।

आधुनिक हिन्दी काव्य में स्वतंत्रता-संग्राम युगीन भावना की खोज एक राष्ट्रीयता का उद्‌बोधक प्रयास है। अनेक प्रसंग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे हैं जिनकी विस्तृत चर्चा राजनीति विषयक एवं साहित्यालोचन ग्रन्थों में प्राप्त है किन्तु लेखक का श्रेय इस बात में है कि उन्होंने सुधी पाठकों के लिये एक ही स्थान पर संक्षेप में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। बिंदु में सिंधु ही प्रस्तुत किया है। चरित्र निर्माण की साहित्य-सर्जना के लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

□ डा० विश्वनाथ याज्ञिक-लखनऊ।

"स्वतंत्रता - संग्राम और पौराणिक हिन्दी काव्य" एक सफल कृति है। देश भक्त राष्ट्र सेवकों को समर्पित यह रचना हमारे स्वतंत्रता-संग्राम की एक मार्मिक तथा हृदयोद्वेलिनी झांकी प्रस्तुत करने में सर्वथा समक्ष रही है।

□

ब्रज की साहित्यिक पत्रिका: 'शिक्षक-संसार'

(सम्पादक—राधेश्याम अग्रवाल)

कुछ अभिमत

'शिक्षक-संसार' में आपने बहुत अच्छी सामग्री देते है। इससे सिद्ध है कि लघु - पत्रिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं होती।

—डा० कैलाशचन्द्र भाटिया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'शिक्षक-संसार' में साहित्य जगत के उपयोगी समाचार और ब्रज काव्य का प्रकाशन कर आपने स्तुत्य कार्य किया है। साधुवाद।

प्रो० कृष्णदत्त वाजपेयी

'शिक्षक-संसार' अपनी लघुकायता के बावजूद अपनी सारस्वत गुणात्मकता की दृष्टि से ततोऽधिक महनीय है। यह पत्रिका ब्रजभाषा के भाषिक और साहित्यिक वैभव से आधुनिक हिंदी जगत को परिचित कराने का सहज आग्रह रखती है।

— डा० श्री रंजन सूरिदेव

'शिक्षक-संसार' साहित्यिक और सांस्कृतिक जानकारियों की मृदुल मंजूषा है।

— पं० प्रेमदत्त मिश्र 'मैथिल'

सीमित कलेबर की यह पत्रिका सचमुच रस भारती है।

—हरिमोहनलाल श्रीवास्तव

आप 'शिक्षक-संसार' में ब्रजभाषा के अच्छे कवित्त सवैया छापि रहे हैं और संगई ब्रज-संस्कृति ते जुड़े कवि और लेखकन आदि कू हू प्रोत्साहित कर रहे हैं।

—राजेन्द्रनाथ चतुर्वेदी ओरिविल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'शिक्षक-संसार' पर गागर में सागर की उक्ति पूर्ण रूपेण लागू होती है। यही एक पत्रिका है जो ब्रज क्षेत्र में होने वाले हिंदी आंदोलन और कार्य को सबके सामने लाती है।

—डा० रामचरण महेन्द्र

'शिक्षक-संसार' के हर पृष्ठ पर ब्रजभाषा, ब्रज-साहित्य और ब्रजभूमि के प्रति अनुराग झलकता है।

—राजशेखर व्यास

'शिक्षक-संसार' यद्यपि लघु पत्रिका है पर अपने आप में अनूठी है।

—सेराज खान 'बातिश'

'शिक्षक-संसार' काया में लघु होते हुए भी साहित्य-संस्कृति और ब्रजभाषा की मौन सेवा कर रही है।

—कविवर लाखनसिंह भदौरिया

डॉ० राम स्वरूप आर्य, बिजनौर
की स्मृति में सादर भेंट—
हरप्यारी देवी, चन्द्रप्रकाश आर्य
संतोष कुमारी, रवि प्रकाश आर्य

Library
185490
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R.P.S

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या 097 ART-B

आगत संख्या 185499

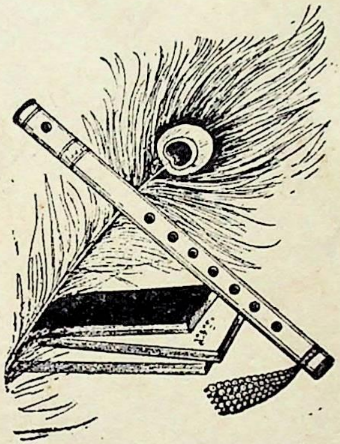
पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar